डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 08-09 मूल्य: 5 रुपए पृष्ठ : 8 R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

शिखर दृष्टि जीवन की...

साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

शीर्षक सत्यापन पत्र संख्या

RAJHIN16831/20/01/2013-TC

hillviewsamachar@gmail.com

75वें स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

जयपुर >> 14 अगस्त व 21 अगस्त, 2021

संयुक्तांक

आज़ादी...

हो एक आज़ादी,
ख़्यालों की भी, ख़्वाबों की भी,
दबी छिपी सी उन यादों की भी।
बातों की भी, जज़्बातों की भी,
और बेलौस हुए हालातों की भी।

उन कशिश भरी ख़्वाहिशों की भी,
कुछ जज़्ब हुए अल्फ़ाज़ों की भी।
बावक़्त बग़ावत कर न सके जो,
उन हमराज़ रहे अहसासों की भी।

उन निरीह मनों की आहों की भी,
रह-रह कर उठती सी हूकों की भी।
बचपन से यौवन तक की उम्रभरी,
पुरख़ामोश रही सी चीख़ों की भी।

कभी रही बेख़ौफ़ शरारतों की,
कुछ शर्मीले रूमानीपन की भी।
कुछ चटख रंगों हुनर-पसंदों की,
बहुत नूरानी रूहानीपन की भी।

बहुत दे चुकी है जश्ने वह आज़ादी,
प्रौढ़ हुए सालों में हमको कब की।
आगे भी बढ़ना है, खुद को गढ़ना है,
चलो मनाएँ एक आज़ादी अब की।

कुछ करें कहीं जो इस जग-जीवन में,
वह बहुतों का या सबका ही सपना हो।
जो कभी गढ़ें कुछ हम, सर्जक बन,
उसमें कुछ मूल सृजन सा अपना हो।

कोई अहम् न हो और भीति न कोई,
गाँठ नहीं हो ऐसे अपने मन की भी।
शिखर छुएँ जब हम सब सहचर हों,
समतल रहते सबके जीवन की भी।

डॉ. कृष्णाकांत पाठक

आपने क्यों हथियार ख़रीदा?

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

छोटी-छोटी बीमारियां विकराल रूप धारण कर लेती हैं और राष्ट्रीय समस्या बन जाती हैं यदि समय रहते समाधान नहीं किया जाये। देश की इन समस्याओं का निदान कैसे हो यह एक विचारणीय प्रश्न है। इस संदर्भ में ध्रुव गुप्त का यह संस्मरण...

ध्रुव गुप्त, पूर्व आईपीएस

देश के कई प्रदेश नक्सली आतंक से त्रस्त हैं। बिहार में नक्सली आतंक से त्रस्त कुछ जिलों के कार्यकाल में मेरा अनुभव यह रहा कि युवाओं में बढ़ी बेरोज़गारी और आमजन तथा प्रशासन-पुलिस के बीच संवादहीनता की वजह से लोगों का व्यवस्था से भरोसे का उठ जाना नक्सलवाद के उदय और विस्तार की मुख्य वज़हें हैं। बेरोज़गारी से निज़ात दिलाना तो सरकार की नीयत और इच्छाशक्ति पर निर्भर है, लेकिन प्रशासन और पुलिस का आम लोगों से सीधा संपर्क हो और वे लोगों की तकलीफों और समस्याओं के प्रति संवेदनशील हो तो मेरा अनुभव है कि नक्सल समस्या पर कुछ हद तक काबू पाया जा सकता है। उदाहरण के लिए मैं वर्ष 2001-2002 की एक घटना का उल्लेख करना चाहूंगा। तब मैं बिहार के पूर्वी चंपारण (मोतिहारी) जिले में पुलिस अधीक्षक के पद पर पदस्थापित था। उस जिले के नेपाल और शिवहर जिले से लगी सीमा के दर्जनों गांवों में नक्सलियों का आतंक था। लगातार लोगों की हत्याएं और गांवों पर हमले हो रहे थे। पुलिस की कोई भी कार्रवाई इसीलिए असफल हो जा रही थी कि उपद्रव के बाद कुछ ही देर में नक्सली नेपाल की सीमा पार कर जाते थे। समस्या की जड़ में जाने पर पता चला कि उस इलाके के थानों, प्रखंडों, अंचलों के लगभग तमाम अधिकारी वहां के एक दबंग मंत्री की अपनी जाति के थे। आम लोगों की समस्याओं और मुकदमों का निदान उनके गुण-दोष के आधार पर नहीं, उस दबंग मंत्री की इच्छा और आदेशों के हिसाब से होता था। इलाके के कई निर्दोष युवा राजनीतिक वजहों से जेल में थे। इस बिकी हुई व्यवस्था के प्रति लोगों में भयंकर असंतोष था। नक्सल संगठनों ने इस आक्रोश का फायदा उठाकर दर्जनों युवाओं के हाथों में बंदूकें थमा दी थीं।

[शेष पेज 2 पर

मज़बूत हो शिक्षा प्रणाली

इक्कीसवीं सदी के दो दशक गुज़र जाने के बाद भी क्या हम अपने आपको एक विकसित और प्रगतिशील समाज कह सकते हैं? इसके लिए हमें विकास की व्याख्या करनी होगी, विकास केवल आय के स्रोत का बढ़ना और जीवन स्तर का समृद्ध होना नहीं है अपितु इसमें अनेक तत्व निहित हैं यथा शिक्षा का स्तर, स्वास्थ्य का स्तर, बौद्धिक स्तर आदि! अर्थात मानव विकास के क्रम में वो सभी तत्व शरीक हैं जो इंसान की जिंदगी को मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार से प्रभावित करें वस्तुतः किसी वर्ग, जाति, लिंग, धर्म, संप्रदाय,नस्ल या जन्मस्थान को लेकर बनाई गई धारणाएं और पूर्वाग्रह विकास के मानकों को सीधे तौर पर प्रभावित करती है हाल ही में एक ओलंपिक दलित महिला खिलाड़ी के घर के बाहर की गई जातिगत टिप्पणी हमारे विकास के दावों पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है। यह हमारी शिक्षाप्रणाली की विफलता है जो आज भी हमारे ज़हन से जातीय श्रेष्ठता का दंभ और समाज की बीमार, स्त्री-द्वेषी पितृसत्तात्मक मानसिकता को निकाल कर नहीं फैंक पाई है! स्त्री को दोयम दर्जे का मानना एक बीमार सोच है जिसके नेपथ्य में पितृसत्ता की श्रेष्ठता का कुंठित विचार जड़ जमाकर बैठा हुआ है और इस रोग को दूर भी समानता के स्वस्थ विचारों का वैक्सीन लगाकर ही किया जा सकता है जो सिर्फ शिक्षा के माध्यम से सम्भव है। इसलिए अब वक्त आ गया है कि हमारी शिक्षाप्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन हो जिससे जातीय श्रेष्ठता और लिंग असमानता से रहित एक शोषण मुक्त समाज का निर्माण किया जा सके।

मोहित शर्मा, (युवा ब्लॉगर और लेखक)

आज़ादी के मायने

रिज़वान एजाज़ी

देशवासी हर वर्ष की तरह धूमधाम से आज़ादी की सालगिरह मना रहे हैं, सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई ।

अब मेरे मनमस्तिष्क में प्रश्न उमड़ रहा है कि क्या वास्तव में देश का आम नागरिक आज़ाद है ?

देशवासी वर्षों से राजा महाराजाओं ,नवाबों ,बादशाहों की प्रजा बनकर रहे हैं। वे हुक्मरान किसी भी तरह से प्रजा के प्रति जवाबदेह नहीं थे क्योंकि या तो उन्हें शासन उत्तराधिकारी के रूप में मिला या अपनी ताक़त, षड्यंत्र के दम पर।

इन हुक्मरानों ने अपनी इच्छा के अनुसार जनता को लाभान्वित किया या शोषण किया।

बग़ावत जैसी चीज़ें शायद उस समय बहुत कम होती थीं। अन्याय या विकास जो भी मिलता जनता अपना भाग्य या दुर्भाग्य समझ स्वीकार करती जाती थी।

उसके बाद ब्रिटिश ज़माना आया।

राजशाही सत्ता के आदी प्रशासनिक अमले ने अपनी पहुँच और विलासिता बनाये रखने के लिये उसी भांड प्रवृति को बनाये रखा और अंग्रेज़ों को ज़बरदस्त विलासी बना दिया, आज जब हम इंग्लैंड या यूरोपियन देशों के राष्ट्राध्यक्षों को देखते हैं तो उन्हें उस तामझाम से मुक्त पाते हैं जो नख़रे हमारे देश के मंत्रियों, सांसदों, विधायकों को प्राप्त हैं।

एक छोटा सा वाक़या यहाँ प्रस्तुत करूँगा ।

लार्ड माउंटबेटन जब वायसराय बन दिल्ली हवाई अड्डे पर उतरे तो उनके साथ पत्नी एडविना और उनके दो पालतू कुत्ते साथ थे ।

वायसराय हाउस पहुँच कर एडविना ने भूखे कुत्तों के खाने के लिये कुछ मंगवाया। कुछ देर में चांदी के चमचमाते बर्तनों में भुने हुए मुर्गे पेश किये गये।

एडविना की खूबसूरत आँखें हैरानी से फैल गईं, सौंधी महक ने उनकी भूख बढ़ा दी , वे प्लेट बाथरूम में ले गईं और मुर्गे खुद चट कर गई, कुत्तों को हड्डियाँ नसीब हुईं।

इस क़िस्से का ज़िक्र एडविना ने अपनी किताब में किया इसका अर्थ यह है कि लन्दन के शाही महल में भी इस तरह की विलासिता उन्हें नसीब नहीं थी जो उन्हें एक भूखे प्यासे , अभावों में जीने वाले भारत में प्राप्त हो रही थी ।

[शेष पेज 2 पर

75वां स्वतंत्रता दिवस

#राजस्थान_सतर्क_है

भारत का संविधान
उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली **बंधुता** बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है;
(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे;
(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले;
(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश के शुभ अवसर पर मूल कर्तव्यों को अंगीकृत कर हम सब सत्य, अहिंसा और शांति के मार्ग पर चलते हुए प्रदेश को उन्नति की ओर बढ़ाएं।

सभी प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द, जय भारत
अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

1 घर से बाहर निकलें तो हमेशा मास्क पहनें
2 आपस में दो गज की दूरी बनाए रखें
3 अपने हाथ साबुन से धोते रहें या सैनेटाइज़ करें
4 वैक्सीन जरूर लगवाएं

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर >> 14 अगस्त व 21 अगस्त, 2021

संपादकीय

अमेरिकी धोखे की कीमत चुकाता अफ़ग़ानिस्तान

अमेरिकी इतिहास में सबसे बुजुर्ग राष्ट्रपति बने जो बाइडन के कुछ फैसले दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति को शर्मसार कर रहे हैं। काबुल पर तालिबानी कब्जे के साथ ही बाइडन वैश्विक कोप के भाजन बन गए हैं। असल में यह तभी तय हो गया था, जब अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपने सैन्य अधिकारियों और खुफिया एजेंसियों की राय को दरकिनार कर जमीनी हकीकत की परवाह किए बिना ही अफ़ग़ानिस्तान से जल्दबाजी में सैन्य बलों की वापसी का एलान कर दिया था। इसके लिए कोई कारगर योजना भी नहीं बनाई। ऐसे में विदेश नीति के मोर्चे पर ऐसा अनर्थ होना ही था। अफ़ग़ानिस्तान पर आतंकी शिकंजे से अमेरिका की जो अंतरराष्ट्रीय फजीहत हो रही है, उसके दोषी बाइडन ही हैं। अफ़ग़ानिस्तान से जल्दबाजी में निकलने को लेकर बाइडन के सामने कोई रणनीतिक या घरेलू मजबूरी भी नहीं थी। जब उन्होंने सत्ता संभाली, तब अफ़ग़ानिस्तान में अमेरिका के केवल 2,500 सैनिक तैनात थे। फिर भी बाइडन को न जाने क्या सूझी कि उन्होंने सैन्य बलों की संपूर्ण वापसी पर मुहर लगा दी।

माना जाता है कि अमेरिका उकता गया था, जबकि गत 20 वर्षों के दौरान गैलप सर्वेक्षणों में अमेरिकी इस सैन्य सक्रियता के विरोध से अधिक समर्थन में ज्यादा नजर आए। अमेरिकी इतिहास की इस सबसे लंबी लड़ाई को इतने सतत स्तर पर मिला समर्थन कोरिया, वियतनाम और इराक जैसे अन्य जंगी अखाड़ों से उलट था, क्योंकि अधिकांश जनता एक स्तर पर आकर उन युद्धों के खिलाफ हो गई थी। एक जुलाई को बगराम एयरबेस खाली करने के साथ ही बाइडन ने जब अफ़ग़ानिस्तान से कदम पीछे खींचने की शुरुआत कर दी, तब से जनता की राय में भी विभाजन आरंभ हो गया। छह जुलाई से 21 जुलाई के बीच हुए गैलप सर्वे में 47 प्रतिशत अमेरिकियों (अधिकांश डेमोक्रेट) ने यह माना कि अफ़ग़ान युद्ध एक गलती थी, जबकि 46 प्रतिशत की राय इसके विपरीत थी।

पाकिस्तानी पिट्ठू तालिबान दुनिया के सबसे दुर्दांत आतंकी संगठनों में से एक है। चूंकि तालिबान ट्रंप के साथ हुए समझौते का खुलेआम उल्लंघन करता रहा, इसलिए बाइडन के उस पर टिके रहने का कोई तुक नहीं था। अगर अमेरिका अफ़ग़ानिस्तान में सीमित सैन्य मौजूदगी रखता तो इससे बहुत ज्यादा खर्च नहीं बढ़ता और अमेरिकी लोगों के लिए जोखिम भी घटता। 2014 में अमेरिका की युद्धक भूमिका खत्म होने के साथ ही अमेरिकी वित्तीय खर्च और सैनिकों को पहुंचने वाली क्षति नाटकीय रूप से कम हो गई थी। तबसे अमेरिकी या नाटो फौजें नहीं, बल्कि अफ़ग़ान सुरक्षा बल ही अग्रिम मोर्चे पर तैनात थे। पिछले करीब साढ़े सात वर्षों के दौरान जहां अफ़ग़ान सुरक्षा बलों के दस हजार से अधिक जवानों को जान गंवानी पड़ी, वहीं अमेरिका के 99 सैनिक ही बलिदान हुए। अगर बाइडन 2,500 सैनिक भी अफ़ग़ानिस्तान में नहीं रखना चाहते थे तो कम से कम इतने सैनिक तो तैनात कर ही सकते थे जो आवश्यकता पड़ने पर अफ़ग़ान बलों को महत्वपूर्ण हवाई सुरक्षा सहयोग मुहैया करा पाते। ऐसा करने से उस विपदा को रोका जा सकता था, जो अब भयावह रूप से आकार ले रही है।

अगर तालिबानी अपनी मुहिम में सफल रहे तो अमेरिका के अघोषित सहयोग से। अमेरिका ने पिछले वर्ष से ही इस आतंकी समूह को एक प्रकार की मान्यता देनी शुरू कर दी थी। इससे अफ़ग़ान सरकार की प्रतिष्ठा

पर आघात हुआ। अमेरिका अपनी सहयोगी अफ़ग़ान सरकार को दरकिनार कर दुनिया के सबसे दुर्दांत आतंकी संगठन से गलबहियां करने लगा। अमेरिकी विश्वासघात का अंदाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि उसने अफ़ग़ान सरकार की पीठ पीछे फरवरी 2020 में तालिबान के साथ समझौता किया। इसके बाद काबुल पर 5,000 तालिबानी कैदियों को रिहा करने के लिए दबाव बनाया। उनकी संख्या अफ़ग़ानिस्तान में तैनात अमेरिकी सैनिकों के बराबर थी। ये तालिबानी रिहा होकर रक्तपात में लग गए। यह कमोबेश ऐसा ही था जैसे 2019 में अमेरिका ने सीरिया में अपने कुर्दिश साथियों का साथ छोड़ दिया था। अमेरिकी विश्वासघात ने अफ़ग़ान सेना के पैरों तले जमीन खिसका दी।

सैन्य वापसी से जुड़ा बाइडन का फैसला घातक प्रभाव डालने वाला रहा। इससे नाटो गठबंधन के 8,500 सैनिक और करीब 18,000 अमेरिकी सैन्य कांट्रेक्टरों की वापसी की राह खुल गई। इन कांट्रेक्टरों की अफ़ग़ान वायु सेना और अमेरिकी आपूर्ति वाले आयुध तंत्र के परिचालन में महत्वपूर्ण भूमिका थी। अमेरिका ने अफ़ग़ान सैन्य बलों को स्वतंत्र रूप से भूमिका निभाने के लिए न तो जरूरी हथियारों से लैस किया और न ही पर्याप्त प्रशिक्षण दिया। वे अमेरिकी और नाटो के समर्थन पर ही निर्भर थे। इस यकायक वापसी ने अफ़ग़ान सैन्य बलों को निस्तेज कर दिया। कांट्रेक्टरों की वापसी ने भी अफ़ग़ान वायु सेना की क्षमता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया, जो अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए उन पर निर्भर थी। सीआइए के पूर्व निदेशक जनरल डेविड पेत्रोस का कहना है कि जब तक अमेरिका ने अचानक अपना समर्थन पीछे नहीं खींचा, तब तक अफ़ग़ान सैनिक बड़ी बहादुरी से लड़ते और अपनी शहादत देते रहे। अमेरिकी फैसले ने उन्हें बड़ा मानसिक आघात दिया और अफ़ग़ान सुरक्षा आवरण भरभराकर ढह गया।

निःसंदेह तालिबान की वापसी से सबसे अधिक नुकसान अमेरिका को पहुंचा है। दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति को एक आतंकी गुट के हाथों पराजय झेलनी पड़ी। दो दशक लंबी अमेरिकी लड़ाई का परिणाम प्रतिद्वंद्वी खेमे की पुनः सत्ता में वापसी के रूप में निकला है। अफ़ग़ानिस्तान में अमेरिकी हार के भू-राजनीतिक निहितार्थ उसकी वियतनाम में हुई पराजय से कहीं अधिक व्यापक प्रभाव वाले हैं। अमेरिका को खदेड़ने में तालिबान को मिली कामयाबी से वैश्विक जिहादी मुहिम से जुड़े अन्य धड़ों को नई ऊर्जा मिलेगी। अफ़ग़ान धरती उनकी ऐशगाह बन सकती है।

अफ़ग़ानिस्तान की सत्ता में तालिबान की वापसी ने भारत की चुनौतियां बहुत बढ़ा दी हैं। खासतौर से पाकिस्तान के पहलू को देखते हुए, जो तालिबान का इस्तेमाल भारतीय हितों पर आघात करने के लिए कर सकता है। वैसे भी अमेरिकी पराभव के साथ भारत के खिलाफ चीन-पाकिस्तान रणनीतिक गठजोड़ और मजबूत ही होगा।

देश को संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप आगे बढ़ाना होगा: सीएम गहलोत

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की रहनुमाई में हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, संघर्ष और शहादत से हमने अनमोल आजादी पाई है। इसके बाद हमारे नेताओं ने दूरदर्शी सोच के साथ एक मजबूत लोकतंत्र की नींव रखी और देश को विकास के पथ पर आगे बढ़ाया। जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा, बोली जैसी विविधताओं वाले इस राष्ट्र को हमें संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप निरंतर आगे बढ़ाना होगा। देश की युवा पीढ़ी पर यह एक बड़ी जिम्मेदारी है। गहलोत रविवार को 75वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित राज्यस्तरीय समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने स्टेडियम में ध्वजारोहण कर परेड का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब देश आजाद हुआ तब यहां बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएं भी नहीं थी। पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, डॉ. अम्बेडकर और मौलाना आजाद जैसे महान नेताओं ने अपनी दूरदर्शिता से भारत को आत्मनिर्भर बनाने की नींव रखी। बीते 74 साल के लंबे सफर में देश के सामने कई गंभीर चुनौतियां आई, लेकिन इन सबका मुकाबला करते हुए देश निरंतर आगे बढ़ता रहा, क्योंकि हमारे लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हैं। इस लोकतंत्र को मजबूत बनाए रखने की जिम्मेदारी हम सभी की है। गहलोत ने कहा कि आजादी के समय राजस्थान में मात्र 13 मेगावाट बिजली बनती थी, लेकिन आज 23 हजार मेगावाट बिजली बनने लगी है। बीते 70 सालों में प्रदेश की तस्वीर बदल गई है। आज प्रदेश में आईआईटी, आईआईएम, एम्स, एनएलयू, एमएनआईटी, निफ्ट जैसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान स्थापित हैं। सड़कों और रेलों का जाल बिछ गया है। अब हमारे युवाओं को उच्च शिक्षा के लिए दूसरे राज्यों में जाने की आवश्यकता नहीं है। बीते ढाई वर्ष में प्रदेश में 123 सरकारी कॉलेज खोले गए हैं, जिनमें 32 महिला महाविद्यालय शामिल हैं। इतना ही नहीं हमने निर्णय किया है कि जिन उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 11 एवं 12 में 500 से अधिक छात्राएं हैं, उन्हें कॉलेज में क्रमोन्नत किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने संवेदनशील, पारदर्शी एवं जवाबदेह सुशासन देते हुए लगातार एक से बढ़कर एक फैसले लिये हैं। जन घोषणा पत्र को सरकार के नीतिगत दस्तावेज के रूप में शामिल करते हुए उसे अपनी कार्ययोजना का अंग बनाया। अब तक इसके 64 प्रतिशत वादों को पूरा कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री निशुल्क दवा एवं जांच योजना तथा निरोगी राजस्थान के बाद अब हमने प्रदेशवासियों को इलाज के खर्च की चिंता से मुक्त करने की दिशा में चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना लागू की है। किसानों के लिए हमने अलग से बजट की घोषणा की है। उनसे की गई ऋण माफी का वादा सरकार ने निभाया है। राज्य के 15 जिलों में किसानों को दिन में बिजली मिलने लगी है। अगले वर्ष तक सभी जिलों में किसानों को दिन में बिजली मिलेगी।

व्यंग्य...

मुख्यमंत्री दर्शन कार्यक्रम

गोपेन्द्र कुमार सिन्हा गौतम

दरबार सज चुका था।धीरे धीरे दर्शनार्थियों की रेलमपेल बढ़ती जा रही थी।इसी बीच निर्धारित समय से बस कुछ घंटा लेट अपने लाटशाही समय से साहब के पधारने की घोषणा भोंपू द्वारा की जाने लगी। लोगों को अपनी बारी का इंतजार शालीनता पूर्वक करने की करने की हिदायत दी जा रही थी। राज्य के एकदम सुदूरवर्ती इलाके से पहुंचे एक सज्जन दर्शन करने के लिए कल रात से ही दरबार स्थल के बगल में डेरा डाले हुए थे।पहला नंबर उन्हें ही मिला था। जैसे ही उनका नाम पुकारा गया भूतनाथ झा....वे दनदनाते हुए साहब के पास पहुंचे। उनकी अच्छी तरह से जांच परख करने के बाद उन्हें मुख्यमंत्री जी के सामने पेश किया गया।भूतनाथ नमस्कार मुख्यमंत्री जी! मुख्यमंत्री,आइए आइए कहिए क्या परेशानी है? महोदय मैंने अपनी जिंदगी भर की कमाई रिटायरमेंट के बाद सहारा बैंक में जमा कर दिया ताकि जीवन को कुछ सहारा मिल जाए पर अब बैंक पैसा ही नहीं लौटा रहा है। घर खर्च चलाना भी मुश्किल हो गया है।आज पेंशन रहता तो हमें यह दिन नहीं देखना पड़ता। बैंक,स्थानीय पदाधिकारी और विधायक, मंत्री के पास दौड़ते दौड़ते जूता घिस गया। बहुत उम्मीद लिए थक हार कर आज आपके पास आया हूं श्रीमान। मुख्यमंत्री; बस जूता घिसने पर आप परेशान हो गए। अभी टूटा नहीं न है!नहीं श्रीमान अभी बच रहा है।हमारा तो सैकड़ों जूता टूटा तब जाकर आज इस कुर्सी तक पहुंचे हैं। कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। आपका सहारा वाला समस्या है न? आपको प्राइवेट बैंक में पैसा जमा करने कौन कह दिया था ? आपलोग पढ़-लिखकर भी गलती करते हैं ! आपको नहीं मालूम ! हमलोग एक भी पैसा प्राइवेट बैंक में जमा करते हैं क्या ! कागज जमा कर दिये ? हां श्रीमान। ठीक है जाइये हम इसे देखवाते हैं क्या हो सकता है। अपने सचिव से जरा उनका देख लिजियेगा अगर कुछ हो सकता है...। वहां उपस्थित अन्य लोगों से मुखातिब होते हुए,देख रहे हैं ना कैसे-कैसे लोग हैं।प्राइवेट बैंक में पैसा जमा कर दिया और कहता है कि पैसा नहीं दे रहा है। ऐसे ही लोगों से देश बर्बाद हो रहा है। इसी बातचीत के क्रम में अगले दर्शनार्थी बांकेलाल पहुँच जाते हैं जो मुख्यमंत्री के गृह जिले के हैं और उनके पूर्व परिचित भी। एकतरफ खड़े होकर अपनी पीड़ा जाहिर करने के लिए इंतजार करने लगे। अपनी बारी आते ही

बांकेलाल, प्रणाम नेता जी। मुख्यमंत्री, प्रणाम प्रणाम !सुने न यादव जी प्राइवेट बैंक में पैसा जमा कर हमसे शिकायत करता है सब। इसमें हमलोग भला क्या कर सकते हैं। अच्छा छोड़िए आपका क्या प्रोब्लम है ?

मेरा कोई खास समस्या नहीं है, पटना आये हुए थे तो सोचे जरा आपसे मिल लेते हैं। मुख्यमंत्री,और सब,उधर का हाल चाल ठीक-ठाक है ? कोई परेशानी है तो कहिए ? आपका ही घर है आते-जाते रहिए।

बांकेलाल, अरे हम क्या कहें परेशानी ! ई का बेचारा के पैसा डूब गया तो आप कह रहे हैं प्राइवेट बैंक में पैसा जमा क्यों किया।आप पहले हमको ई बताइए प्राइवेट बैंक जनता खोलवा रही है या सरकार ? मुख्यमंत्री,छोड़िए इ सब चलते रहता है राजनीति में। आपके तरफ शराब के दूकानें बंद हैं न ?जी बिल्कुल नेता जी। शराब की दूकानें पूरी तरह से बंद हैं। किसकी मजाल कि दुकान खोल दे।पर एक बात है शराब बंदी होने से अब शराब चौपाया हो गया है खुद चलकर घर- घर पहुंच जाता है वह भी रात दिन कभी-भी।बस फोन के घंटी बजते ही लोगों की इच्छा पूर्ति करने के लिए दरवाजे पर हाजिर। मुख्यमंत्री ,अच्छा नल-जल का क्या हाल है ? समय से साफ सुथरा पानी मिल रहा है लोगों को।जी बिल्कुल साफ सुथरा पानी हमलोग को तो मिल रहा है पर चापाकल के। नल तो जल में प्रवाहित हो गया। मुख्यमंत्री ,वाह!आपलोग तो जागरूक हैं।कैसे भी मिल रहा है मिलते रहना चाहिए।बस हमारी भी यही कोशिश है। अच्छा हमने बिजली तो चौबीसों घंटे उपलब्ध करवा दिया है।आपलोग समय से बिजली बिल जमा करते हैं न ? अभी तक तो करता था पर आज के बाद नहीं करेंगे ।

मुख्यमंत्री : ऐसा क्यों यादव जी ?

आप ही ने तो कुछ देर पहले एक आदमी से कहा कि प्राइवेट में पैसा क्यों जमा कर दिया। बिजली बिल भी तो प्राइवेट कंपनी ही वसूलती है तो फिर मैं जानबूझकर समस्या मोल क्यों लूं।जब जिम्मेवारी लेने को कोई तैयार नहीं है। मुख्यमंत्री, हाथ जोड़कर जाइये आपकी जो इच्छा हो किजिए।

बाहर निकलने पर मीडिया वाले बांके लाल जी को घेरकर पूछने लगे ....

पहला, बांकेलाल जी आप बहुत देर तक मुख्यमंत्री जी के साथ रहे क्या आपकी समस्या का समाधान मिला ? देखिए हम कोई समस्या लेकर नेता जी से मिलने नहीं गए थे।पर एक बात सीखकर जरूर आये हैं हमें प्राइवेट संस्थानों पर विस्वास नही करना चाहिए। ऐसा मुख्यमंत्री जी के बातों से जाहिर होता है। उन्होंने ने एक दर्शनार्थी से कहा प्राइवेट बैंक में पैसा क्यों जमा किया ? हमलोग एक भी पैसा प्राइवेट बैंक में जमा नहीं करते हैं।दूसरा, यादव जी तब आप आगे से क्या करने वाले हैं ? हमलोग क्या करने वाले हैं बस मुख्यमंत्री जी के बातों पर अमल।तीसरा, इसका मतलब आप निजीकरण के खिलाफ़ में हैं ? जी बिल्कुल। दूसरे दिन सभी टीवी चैनल और अखबारों का हेडिंग यादव निजीकरण के विरोध में....

गुस्ताखी माफ़ राजनीति साफ!

पेज एक का शेष...

आपने क्यों हथियार...

सबसे पहले मैंने इस इलाके के थानों की संरचना बदली और सभी जातियों के कर्मठ अधिकारियों को वहां तैनात किया। फिर मुझे लगा कि थानों के माध्यम से नहीं, बिना किसी तामझाम के मुझे खुद लोगों के बीच जाकर उनकी समस्याएं जाननी और यथासंभव उनका निबटारा करना चाहिए। पुलिस की खोई हुई विश्वसनीयता को लौटाने के लिए लीक से हटकर कुछ करने की ज़रूरत थी।

उस क्षेत्र के कुछ अधीनस्थ पुलिस अधिकारियों और अपने स्टेनो को लेकर मैंने इलाके की पैदल यात्रा शुरू की। वर्दी में नहीं, सादे कपड़ों में। रास्ते में पड़ने वाले हर गांव में किसी बगीचे या स्कूल के परिसर में रुकता था। वहां दरियां बिछाकर या घास पर बैठकर लोगों की समस्याएं सुनता। ज्यादातर समस्याएं दबंगों द्वारा गरीबों की जमीन पर कब्ज़े और झूठे मुक़दमे में उन्हें फंसाने की थी। मैं स्पॉट पर ही मामलों की जांच करा कर झूठे मुकदमों को खारिज करने का आदेश पारित करता चलता। एक दिन में दो-तीन गांवों में यह सिलसिला चलता। जिले के पत्रकार मित्रों ने उस अभियान को गति देने में भरपूर मदद की। धीरे-धीरे मेरे साथ पद-यात्रा पर चलने वाले लोगों की संख्या हजारों में हो गई। यात्रा में हम किसी का आतिथ्य नहीं स्वीकार करते थे। भोजन और चाय बनाने के लिए कुछ सिपाही और चौकीदार हमारे साथ थे। दिन में भात-दाल और रात में लिट्टी-चोखा। हम खुद भी खाते और वहां मौजूद ग्रामीणों को भी खिलाते।

धीरे-धीरे लोगों से आत्मीयता और भरोसे का रिश्ता बनता चला गया। मैं न्याय का विश्वास देकर लोगों से आग्रह करता कि वे अपने परिचय के नक्सलियों से संपर्क कर उन्हें कानून के आगे आत्मसमर्पण करने और समाज की मुख्यधारा में वापस लौटाने में मदद करें। उनके साथ न्याय होगा और ज़रूरत हुई तो उनके पुनर्वास में भी मदद की जाएगी। तीन दिनों बाद नक्सलियों की तरफ से न्याय की मांग और आत्मसमर्पण के प्रस्ताव आने लगे। मैंने उनमें से कुछ के साथ समाज और पुलिस द्वारा हुए अन्याय का प्रतिकार करने की भरसक कोशिशें भी की। चौथे दिन जब मैं एक गांव में बैठकर लोगों के मसलों का समाधान कर रहा था कि आत्मसमर्पण के लिए कुछ नक्सलियों के वहां आने की सूचना मिली। जिला मजिस्ट्रेट को फोन कर मैंने उन्हें भी बुला लिया। शाम होते-होते करीब करीब तीन दर्ज़न कुख्यात नक्सलियों ने हजारों ग्रामीणों के समक्ष पुलिस के आगे आत्मसमर्पण कर दिया और भविष्य में किसी भी परिस्थिति में हिंसा का रास्ता न चुनने की कसमें खाईं। वह दृश्य मेरे लिए ही नहीं, वहां उपस्थित दूसरे अधिकारियों और लोगों के लिए भी एक अभूतपूर्व अनुभव था।

उस दिन के बाद मेरे कार्यकाल तक मोतिहारी जिला पूरी तरह नक्सली आतंक से मुक्त रहा। उस घटना के दो दशक बाद आज भी कमोबेश मुक्त ही है। मुझे अफ़सोस बस इस बात का रहा कि मेरे स्थानांतरण के बाद जिले में आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों के पुनर्वास का काम ठीक वैसा नहीं हो सका जैसा मैंने और खुद उन पूर्व नक्सलियों ने भी सोचा था। खैर, इस किस्से का लब्बोलुबाब यह है कि ताक़त से आप सिर्फ किसी से बदला ले सकते हैं, किसी को बदलना तो सिर्फ न्याय, प्रेम, सहयोग और करुणा से ही संभव है। इस देश से उग्रवाद की समस्या तब तक ख़त्म नहीं हो सकती जबतक न्याय की व्यवस्था सबके लिए सुलभ नहीं होगी और प्रशासन तथा पुलिस के लोगों को मानवीय और संवेदनशील नहीं बनाया जाएगा। फ़िलहाल उसी दौर का कहा हुआ एक शेर आप सबके लिए!

प्यार से भी हम मर जाते हैं...
आपने क्यों हथियार ख़रीदा !

आज़ादी के ...

यह तो एक उदाहरण मात्र है परन्तु इस अकेले उदाहरण से स्पष्ट है कि भारत में विलासिता ,आडम्बर पर निर्धन जनता की गाढ़ी कमाई का कितना बड़ा भाग बर्बाद किया जाता रहा है ।

अंग्रेज़ों के मन में भारत की निर्धन ,अभावग्रस्त जनता के प्रति कोई विशेष संवेदनशीलता नहीं थी ।

रेल ,सड़क आदि का विकास हुआ वह उनकी सुविधा और देश भर में तुरन्त पहुँच बनाने के लिये किया गया या ब्रिटेन से आयातित सामग्री को पहुँचाने के लिये साधन स्थापित किया ।

हाँ ! अंग्रेज़ देश में एक सिस्टम ज़रूर बना गये जिसमें निर्णय लेने वाले ऑफ़िसर वे स्वयँ होते थे और उनकी विलासिता में कहीं कोई कमी नहीं रहती थी।

प्रशासन उनके मनमुताबिक ही चलता था ,दरअसल अच्छा बुरा उनके इशारों पर ही होता आया है ।

लेकिन अन्याय ,जुल्म से शासन लंबे समय तक नहीं चल सकता है ।अंग्रेजों के विरुद्ध बग़ावत होती रही ,जिसका बहुत लंबा इतिहास है ।

आज़ादी मुफ़्त में नहीं मिली ।

हज़ारों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी जानें क़ुर्बान की ,हज़ारों ने जेलों की सलाखों के पीछे अपनी ज़िंदगी की बेहतरीन उम्र गंवाई और 15 अगस्त 1947 को देश आज़ाद हुआ लेकिन विभाजन का एक ऐसा घाव अंग्रेज़ छोड़ गये जो हमेशा रिसता रहेगा , तकलीफ़ पहुंचाता रहेगा ।

अंग्रेज़ जो प्रशासनिक ढाँचा ,सिस्टम बना गये थे आज़ादी के बाद भी वही सिस्टम बना रहा बस अंग्रेजों की जगह हिंदुस्तानी अधिकारी उस में फिट होते चले गये ।

वो जो सर्वोच्च प्रशासनिक अमला था उसने अपना वर्चस्व बनाये रखा और लोकतंत्र,प्रजातंत्र के नाम पर जो जनप्रतिनिधि जीत कर आते रहे उन्हें उसी सिस्टम का हिस्सा बनाते चले गये ।

जनप्रतिनिधि अपने स्वार्थ ,विचारधारा ,अहँकार ,कुर्सी को बनाये रखने की जुगत में लगे रहे ,और देश की निर्धन जनता जहाँ थी ,वहीं पड़ी रही ।

दरअसल जनता खुद अपनी निर्धनता से बाहर आने को उत्सुक नहीं थी क्योंकि निर्धनता एक आदत है और आदत बहुत मुश्किल से छूटती है ।

अब देशी हुक्मरानों ने अवाम की कमियों को अपनी ताक़त बनाया ,उनकी भावनाओं को भुनाया और सत्ता के शीर्ष पर बने रहने के गुर सीख लिये कि जनता को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं से अधिक दिलचस्पी जातिवाद ,लोभ लालच और क्षणिक लाभ, अवसरों में है ।

न दूर की उनकी सोच है न राष्ट्रीय भावनाएँ उनमें हैं ।

यही वजह रही कि आज़ादी के 75वें वर्ष में भी आज देश की अधिकांश समस्याएँ जस की तस पड़ी हैं ।

ग़रीबी ,अज्ञानता ,अशिक्षा ,स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता ,नक्सलवाद ,अलगाववाद ,बेरोज़गारी, जातिवाद ,क्षेत्रवाद से लड़ने की न तो किसी सरकार ने इच्छाशक्ति दिखाई न ही ठोस प्रयास किये क्योंकि इन समस्याओं को हल किये बिना भी उनकी सत्ता बनी रहने में कोई अड़चने नहीं थीं ।

हाँ सरकारें बदलती गईं ,जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अमला अपने सुख सुविधाओं की लगातार पूर्ति करता रहा ।

वेतन ,भत्ते मुफ़्त रेल ,हवाईजहाज़ ,रोडवेज़, यात्रा ,पेंशन और तमाम सुखसुविधाओं से भरपूर उनकी जीवनशैली राजेमहाराजाओं से किसी तरह कम नहीं है ।

न उनके लिए किसी भी तरह के आर्थिक स्त्रोतों की कमी होती है न सरकारी ख़ज़ाना उनके किसी भोगविलास में कमी आने देता है।

जनहितार्थ योजनाएँ बनतीं ,करोड़ों अरबों का बजट और मसौदे हर वर्ष तैयार होते और वे भृष्टाचार ,लापरवाही , अनियमितताओं की भेंट चढ़ जाते ।

यही कारण रहा कि संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र ,सर्वाधिक जनसंख्याओं में अग्रणी देश हिंदुस्तान की जनता का अधिकाँश भाग आज भी अपनी मूलभूत सुविधाओं से वंचित है ।

आज भी देश टूटी फूटी सड़कों ,इमारतों , धराशायी होती व्यवस्थाओं का मोहताज है क्योंकि न तो देश की ब्यूरोक्रेसी ने कभी उन्हें दूर करने का प्रयास किया न ही किसी नेता ने राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखा कर इस सिस्टम को तोड़ने का प्रयास किया और राजेमहराजों ,अंग्रेज़ो के ज़माने की अय्याशियाँ ,आज भी मौजूद हैं ,देश का अधिकाँश राजस्व उनकी भोगविलासिता पर या भ्रष्टाचार पर बर्बाद किया जा रहा है और देशवासी आज़ादी के पहले जैसी स्थिति पर ही ज़िन्दा रहने पर मज़बूर है। वह पहले राजेमहाराजों बादशाहों अंग्रेजों की ओर आशान्वित निगाहों से देखते हुए जयकारे लगाते थे और आज के आधुनिक सत्ताधीशों के नारे लगा रहे हैं।

हुक्मरान बदलते जा रहे हैं , वे अपने व अपनों को समृद्ध करते जा रहे हैं, सिस्टम वहीं का वहीं है। निर्धनता ,देश की समस्याएँ वहीं की वहीं हैं और हम हर वर्ष आज़ादी की सालगिरह पर झण्डा फहरा कर अपने आपको आज़ाद कहलाने की ख़ुशफ़हमी में जी रहे हैं, जीते रहेंगे और हर वर्ष आज़ादी की वर्षगाँठ मनाने के लिये बक्सों में से तिरंगे झंडे निकालते रहेंगे।

डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22

R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

शिखर दृष्टि जीवन की...

साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलटू समाचार

जयपुर >> 14 अगस्त व 21 अगस्त, 2021

संयुक्तांक

अनंत संभावनाओं से भरा अंतर्राष्ट्रीय युवा रंग निर्देशक : गुणमनि बरुवा

भारत के उत्तर-पूर्वी प्रदेश हमेशा से हमारे लिए रहस्यमय और कौतूहल भरे रहे हैं। वहां के लोगों से लेकर वहां की सभ्यता, संस्कृति, गीत-संगीत, नाटक सब इतने सुकून भरे हैं कि कोई वहां जाए तो वहीं का होकर रह जाए पर दुर्भाग्यवश सही तरीके से ये प्रदेश और इनका जनजीवन लोगों के समक्ष आ नहीं पाया है। इन प्रदेशों से कभी-कभार कोई भूपेन हज़ारिका, कोई रतन थियाम या कोई मैरी कॉम राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे पहचान दिलाने में सफल हो जाते हैं। इसी श्रृंखला की अगली कड़ी का नाम है असम के युवा रंग-निर्देशक गुणमनि बरुवा।

गुण ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय में विशेषज्ञता के साथ ड्रामेटिक आर्ट्स में पोस्ट-ग्रेजुएशन किया है। साथ ही वेणु गोपाल राव, पी. कन्नन और गोपीनाथ जैसे वरिष्ठ गुरुओं से कुडीयट्टम, कथकली और कलारीपयात्तु का भी प्रशिक्षण लिया है।बड़े रंगकर्मियों में नसीरुद्दीन शाह, रॉबिन दास, इरफ़ान खान, आदिल हुसैन, त्रिपुरारी शर्मा, अनुराधा कपूर और बिद्यावती फुकन के साथ भी उनकी नाट्य कार्यशाला में काम किया है।गुण राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की रेपर्टरी कंपनी से बतौर अभिनेता तीन वर्ष तक जुड़े रहे हैं। रंगगुरु संजय उपाध्याय, अनिरुद्ध खुटवाड और वीरेंद्र शर्मा से गुण ने नौटंकी और तमाशा की ट्रेनिंग ली है। पोलैंड के जार ग्रुप के जार्गी ग्रोतोव्स्की लेबोरेट्री थिएटर के 18 दिवसीय कार्यशाला से भी गुण जुड़े रहे हैं. असम के 'उत्सा असोम' नामक थिएटर कंपनी के साथ गुण 2005 से 2008 तक सम्बद्ध रहे हैं। आदिल हुसैन के साथ इंटेंसिव स्पेस और बॉडी वर्कशॉप में गुण रहे हैं। अश्वथ भट्ट के साथ इंटेंसिव क्लाउनिंग वर्कशॉप में गुण ने सहभागिता की है। एन. जी. रोशन के साथ इंटेंसिव मेकअप वर्कशॉप में भी गुण ने भागीदारी की है।अर्जुन रैना के साथ इंटेंसिव अलेक्ज़ेन्डर वौइस् एवं स्पीच तकनीक भी गुण ने सीखी है। के. एन. पणिक्कर, रत्ना पणिक्कर एवं अंजना पुरी के साथ इंटेंसिव थिएटर संगीत कार्यशाला में भी गुण ने भागीदारी की है। सुरेश भारद्वाज से इन्होंने प्रकाश परिकल्पना सीखी है।गुण को असमी ढोल बजाने में महारत हासिल है।ढोल का प्रशिक्षण गुण ने कोनपाई ओजा, बिनोय कलिता एवं रंजीत गोगोई से लिया है।बतौर परिकल्पक और निर्देशक गुण ने मनमोथेर सीथी, धुलिया ओजा, कुंजालोता कापोउफुल, मोन पुआराजुई, मन-मंच अ जर्नी, भक्तातोर जात पात मात, जोकर, हेपाहोर जूलूँगा, मोउनो उठ मुखोर हृदोय, क्लैन्डेस्टाईन फ्लेम और धुलिया जैसे असमी नाटकों का निर्देशन किया है।बच्चों के लिए बतौर परिकल्पक और निर्देशक गुण ने अंकिया भावना शैली में अरुजुन भंजन, बांदोर अरु जियाल, राख्येख हुआई भाल, हु इज़ द किंग और होपुने उरा मारे होपुन अनिबोले का निर्देशन किया है।बतौर नाट्य लेखक गुण ने किहोत किहे पाले, कुंजालोता कापोउफुल, हेपाहोर जूलूँगा, मन-मंच अ जर्नी, ओह इमोशन और फोक वर्सेज वेस्ट नामक नाटक लिखे हैं।गुण ने थिएटर ओलंपिक्स और भारत रंग महोत्सव के साथ साथ कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय थिएटर महोत्सवों में अपने नाटकों के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।लगभग 5 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय थिएटर सेमिनारों में गुण ने भाग लिया है। जिनमें प्रमुख हैं...

- गुटी फुलार गामोसा (निर्देशक बिद्यावती फुकन)
- अभिज्ञान शाकुंतलम (निर्देशक के.एन. पणिक्कर) विरासत (निर्देशक अनुराधा कपूर)
- चेरी ऑर्चर्ड (निर्देशक रॉबिन दास)
- मैकबेथ (निर्देशक जमील अहमद)
- बेगम का तकिया, सब ठाट पड़ा रह जाएगा (निर्देशक रंजीत कपूर),
- ब्लड वेडिंग (निर्देशक नीलम मानसिंह चौधरी)
- ड्राइव (निर्देशक डेनिश मफ्फिलेर)
- जात ही पूछो साधु की (निर्देशक राजिंदर नाथ)
- ओल्ड टाउन (निर्देशक रोयास्तान अबले)
- हज़ार चौरासी की माँ (निर्देशक शांतनु बोस)
- सैयां भये कोतवाल (निर्देशक अनिरुद्ध खुटवड)
- एक रुका हुआ फैसला (निर्देशक कीर्ति जैन)
- खालिद की खाला (निर्देशक रमेश तलवार) और वर्तमान में गुण कला निर्देशक के रूप में असम के रोंगदुली सांस्कृतिक केंद्र में कार्यरत हैं।

गुण की उपलब्धियों की लम्बी श्रृंखला है। आईये गुण से ही जानते हैं उनके बारे में...

Q. आपमें थिएटर का शौक कहाँ से पैदा हुआ? क्या आपके घर में नाटक की परंपरा थी ?

मेरे पिता स्वर्गीय पद्मेश्वर बरुआ असम की पारंपरिक नाट्य शैली अंकिया भावना के मंजे हुए कलाकार थे और गाँव में हर साल अंकिया भावना में किसी न किसी भूमिका में होते थे। पिता जी असम के मशहूर मोबाईल थिएटर के भी एक प्रमुख कलाकार रहे। यही भावना देखकर ही थिएटर के प्रति पहला रुझान हुआ। फिर मेरी एक दीदी जिनका नाम प्रीतिरेखा बरुआ था उन्होंने एक नाटक किया था जब मैं चौथी कक्षा में था और उन्होंने मुझे उस नाटक में ध्रुव की भूमिका करने को दी थी। तब तो मुझे कुछ समझ में नहीं आया पर पांचवी और छठी कक्षा तक आते आते मैं स्कूल के नाटकों में भाग लेने लगा. जब पुरस्कार मिलने लगे तो मेरी रूचि नाटकों में बढ़ने लगी। फिर कॉलेज तक यही सिलसिला चलता रहा।

Q. फिर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय कैसे आना हुआ ? क्या आपने पहले से तय कर रखा था कि आपको एनएसडी जाना है ?

नहीं, नहीं मुझे तो पता भी नहीं था कि एनएसडी किस चिड़िया का नाम है या एनएसडी जैसा कोई संस्थान भी है। दरअसल मेरे एनएसडी आने के पीछे एक लम्बी कहानी है और मुझे एनएसडी तक पहुंचाने में मेरे एनएसडी पासआउट सीनियर बिद्यावती फुकन का बहुत बड़ा योगदान है।

दरअसल हुआ यह कि ग्रेजुएशन के बाद मैं कमाई करने के चक्कर में कल्चरल फील्ड से हट गया।चूंकि घर की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी तो मैंने 2006 में एक व्यवसाय शुरू किया। इस व्यवसाय में मैं धान को इकठ्ठा करके और उससे चावल निकलवाकर असम के बाढ़ग्रस्त इलाकों में उस चावल को दिया करता था। 2006 में ही असम में एक रैली हुई। आपको तो पता ही है कि असम में उल्फा का प्रभाव रहा है. इस रैली के दौरान यहाँ के एक नेता अजीत मोहंता को आर्मी ने मार डाला।जनता भड़क गई. पूरे गाँव के लोग धरने पर बैठ गए।इस घटना की राजकीय जांच की मांग कर रहे थे ये लोग पर जब इस घटना की जांच के लिए कोई नहीं आया तो जनता और

भड़क गई. करीब 20,000 लोग जमा हो गए।आक्रोशित भीड़ ने पुलिस औरआर्मी द्वारा लगाया गया बैरिकेड तोड़ दिया।फायरिंग हुई जिसमे 9 लोग गुज़र गए. उस गोलीबारी में मेरे बड़े भाई को भी गोली लगी थी।जब मेरे बड़े भाई को गोली लगी थी तो उनके साथ डिब्रूगढ़ अस्पताल में मैं लगभग 2 महीने तक रहा। फिर हम घर आए। तब बीहू का सीजन था और हम यह सारा ग़म भुलाने के लिए बीहू में भाग लेने लगे. तभी मुझे एनएसडी पासआउट बिद्यावती फुकन ने देखा जो 2004 में एनएसडी से पासआउट हुए थे. उन्होंने ही मुझे एनएसडी के बारे में बताया. बिद्यावती के नाटक गुटी फुलार गोमोसा में मुझे लीड रोल दिया फुकन दा ने। इसी दौरान पहली बार मुझे लगा कि यही मेरा फील्ड है। मुझे इसी में जाना है।मुझे नाटक ही करना है।इस नाटक से पहले मैं एनएसडी के बारे में जानता तक नहीं था। फुकन दा से मैंने जाना और 2008 में एनएसडी में आवेदन किया और मेरा चयन हो गया. और उसके बाद नाटकों को लेकर जो मेरी यात्रा चल रही है वह आप सबके सामने है।

Q. आपको असम के वाद्ययंत्रो को बजाने में भी महारत हासिल है जैसा कि मैंने सुना है. क्या-क्या बजाते हैं आप?

मैं असम का ढोल, खोल, बांसुरी सब बजाता हूँ. दरअसल मेरे दादाजी स्वर्गीय रवि बरुआ ढोल के मास्टर थे. शुरुआत में उनसे ही यह रूचि मुझमे आई फिर धीरे-धीरे खोल, बांसुरी सब बजाना अच्छा लगने लगा तो सब सीखता गया।

Q. आपको संस्कृति मंत्रालय की ओर से जूनियर फ़ेलोशिप भी मिली है. आप किस विषय पर शोध कर रहे हैं ?

मेरा शोध धुलिया ओजा पर है।धुलिया ओजा का मतलब होता है ढोल का मास्टर। ढोल बहुत लोग बजाते हैं पर दरअसल बहुत कम लोग ढोल का हर बोल बजा सकते हैं।बहुत कम लोग जानते हैं कि ढोल में कितने राग और कितने बोल हैं।ढोल के हर बोल के साथ एक कहानी जुडी है।जब ढोल बजाया जाता है तो हर बोल के साथ एक कहानी निकलती है ढोल से।हर बोल एक गीत है। इन्हीं चीज़ों पर मेरा शोध आधारित है। दरअसल ढोल सिर्फ़ एक वाद्य यंत्र नहीं, ढोल और उसे बजानेवाला मास्टर अपने आप में एक पूरी परंपरा का वाहक है। अपने शोध के द्वारा मैं उस पूरी परंपरा पर काम करना चाहता हूँ और उस परंपरा को दुनिया के सामने लाना चाहता हूँ।

Q. कोरोना जैसी महामारी और लॉकडाउन के दौरान आप थिएटर को कैसे जीवंत रखे हुए हैं ? लॉकडाउन में आपकी क्या योजनायें हैं ?

मैं पिछले कई वर्षों से असम में रह रहा हूँ और लॉकडाउन के दौरान भी यहीं हूँ और असम के ग्रामीण बच्चों के साथ कार्यशालाएं कर रहा हूँ।इस दौरान अपने दो नाटकों को लेकर दो दिनों का एक नाट्य समारोह भी किया। बच्चों को लेकर लोक कार्यशालाएं भी कर रहा हूँ। बच्चों को बीहू की ट्रेनिंग भी दी थी और सोचा था कि बच्चों को लेकर बीहू करूंगा मार्च में पर लॉकडाउन की वजह से वह संभव नहीं हो पाया।

Q. भविष्य की क्या योजनायें हैं आपकी? किसी विशेष नाटक पर काम करने का सोच रहे हैं आप?

उत्तर - जी भविष्य में कई नाटकों पर काम करने का विचार है पर पहले दुनिया से ये कोविड तो ख़त्म हो और लॉकडाउन तो खुले। फ़िलहाल जो सबसे पहली योजना है वह असम की एक लोक शैली गायन-बायन को लेकर एक नाटक करने की है। इस शैली में मृदंगम का इस्तेमाल होता है गायन के साथ। यह मुख्य रूप से धार्मिक शैली है, आध्यात्मिक शैली है।इस शैली के गायन का इस्तेमाल पूजा-पाठ में होता है।हम जिस संप्रदाय से हैं मोरख या मोराल संप्रदाय से उस संप्रदाय के लोग इस पद्धति का इस्तेमाल पूजा-पाठ में करते हैं। इसी शैली पर आधारित एक नाटक करने की योजना है क्योंकि इस शैली में अभीतक काम नहीं हुआ है इसलिए इस शैली में काम करने का निश्चय किया है मैंने।इस नाटक का पेपर वर्क, स्क्रिप्ट सब पर काम हो चुका है. अब बस लॉकडाउन खुलने का इंतज़ार है। अभी के लिए बस इतना बताऊंगा कि इसमें राग और बोल एक कूट (कोड) भाषा में होते हैं. बाक़ी नाटक का इंतज़ार कीजिये।सारे रहस्य मंच पर खुलेंगे।उस कोड लैंग्वेज को मंच पर डिकोड करूंगा(मुस्कुराते हुए गुण कहते हैं. गुण की इस मुस्कराहट में कई राज़ छिपे हैं. गुण की मुस्कराहट में भी एक कोड लैंग्वेज है)

साक्षात्कारकर्ता: के.मंजरी श्रीवास्तव
(अंतर्राष्ट्रीय लेखिका, कवयित्री, थियेटर समीक्षक)

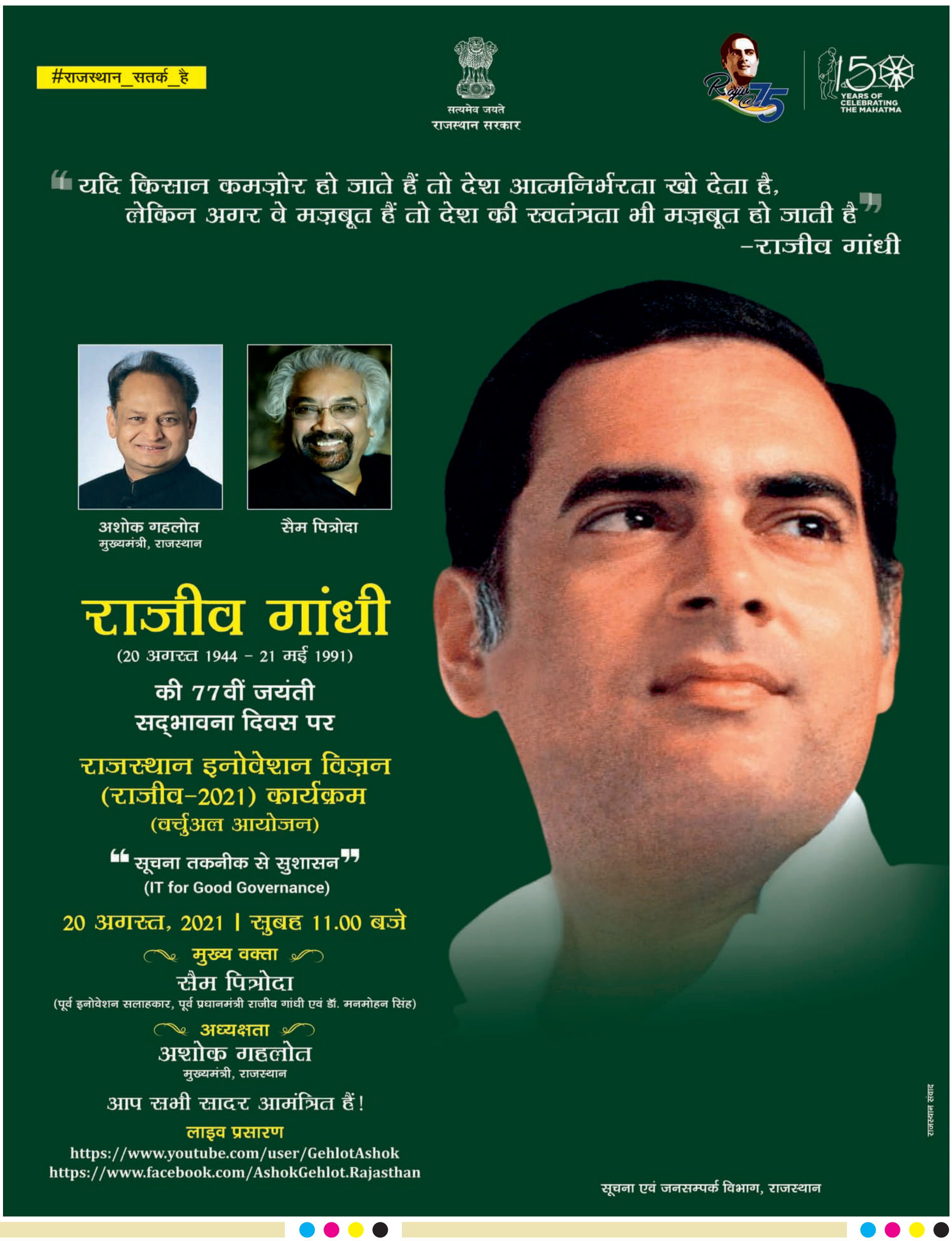

कला के आकाश में चमकते दो सितारे

अंतर्राष्ट्रीय लेखिका, कवियित्री, थियेटर समीक्षक कृष्णन मंजरी श्रीवास्तव एवं अंतर्राष्ट्रीय कथक नृत्यांगना पंखुड़ी श्रीवास्तव

भारत देश कला,साहित्य और संस्कृति के भंडार से भरा हुआ है और इस भंडार में हर साल बढ़ोतरी ही होती आई है क्योंकि हर साल कोई न कोई प्रतिभा उभरकर विश्व में अपना नाम स्थापित करती है और स्वर्ण अक्षरों में भारत के नाम को अंकित करती है विश्व के मानसपटल पर। देश के किस कोने से कब कौन प्रतिभा निकल कर देश को प्रकाशमान कर देगी यह नहीं कहा जा सकता लेकिन पूत के लक्षण पालने में ही नज़र आ जाते हैं उसी प्रकार भविष्य में भारत के भाल पर अपना नाम अंकित करने वाले प्रतिभावान व्यक्तित्व की जीवनयात्रा यह परिभाषित करती है कि उसकी जीवनयात्रा किस किस मोड़ से गुज़री और कब उसने क्या निर्णय लिए और क्या विचारधारा मन में रखी। इसी संदर्भ में आज हम बात कर रहे हैं बिहार के बरौनी शहर की दो प्रतिभाओं की जो एक ही शहर या एक ही राज्य से नहीं आतीं बल्कि एक ही परिवार से आती हैं और जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। आत्मविश्वास और स्वाभिमान से भरपूर यह दोनों बहनें किसी परिचय की मोहताज नहीं है क्योंकि अक्सर किसी ना किसी उपलब्धि या सम्मान के कारण पत्र-पत्रिकाओं में इनके इंटरव्यू छपते रहे हैं।दूरदर्शन और आकाशवाणी में भी आपने अपनी जीवनयात्रा साझा की है। दिल्ली,पटना या बिहार ही नहीं बल्कि देश और विदेश के विभिन्न कोनों में आपने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है और अपना नाम कला जगत के आँगन में बड़े-बड़े सुंदर अक्षरों में अंकित भी करवाया है। कला जगत में चाहे कला लेखन में हो या वादन में, वाचन में हो या गायन में,नृत्य में या हो कृत्य में, अभिवादन में हो या संचालन में हर कला व्यक्ति के व्यक्तित्व को निर्धारित करती है और स्थापित करती है उसे उसके द्वारा किए गए कुशल प्रदर्शन से।

साक्षात्कार की इसी शृंखला में हिलव्यू समाचार प्रस्तुत कर रहा है इन दो बहनों की जीवन यात्रा को।

जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में सफल मुकाम तो हासिल किया ही है बल्कि अपने परिवार का ही नहीं देश राज्य और शहर का नाम भी रोशन किया है। मंजरी श्रीवास्तव लेखन व काव्य की दुनिया में बहुत बड़ा स्थान रखती हैं और जानी मानी थियेटर समीक्षक के रूप में भी आप अपनी पहचान रखतीं हैं। इसी तरह पंखुड़ी श्रीवास्तव ने भी अपने आप को नृत्य जगत में स्थापित किया है। कथक की जानी-मानी नृत्यांगना पंखुड़ी श्रीवास्तव नृत्य के समान ही सुंदर,सहज हैं और अद्भुत भावभंगिमा व्यक्तित्व वाली भी है। मधुर भाषी और पूरे आत्मविश्वास के साथ में अपने जीवन को एक सही दिशा देने वाली पंखुड़ी श्रीवास्तव युवाओं के लिए आदर्श प्रस्तुत करती हैं। वही मंजरी श्रीवास्तव भी लेखन और थियेटर की दुनिया में एक आदर्श छवि के रूप में जानी जाती हैं। मंजरी श्रीवास्तव और पंखुड़ी श्रीवास्तव कला जगत के दो हीरे हैं जो देश में कला के मंदिर को निरन्तर दैदीप्यमान कर रहे हैं। आइए हम इनसे जानते हैं इनके जीवन की कहानी उन्हीं की ज़ुबानी...

कला जगत में एक जाना माना नाम है कृष्णन मंजरी श्रीवास्तव

के. मंजरी अनुभव, अनुभूति और अभिव्यक्ति तीनों का हैं सम्मिश्रण

साक्षात्कारकर्ता : शालिनी श्रीवास्तव

अपने जीवन सफर में के. मंजरी ने सोचा नहीं किया था कि क्या बनना है लेकिन जिंदगी ने जब अवसर दिया तो उस अवसर को पहचानने,समझने और उसे थाम लेने की जो काबिलियत उनमें थी और वह बहुत कम लोगों में पाई जाती है कि जो जीवन में अनायास आने वाले सुअवसर को अपना करियर बना लेते हैं। विद्यार्थी जीवन से कविताएँ और कविताओं से थियेटर तक का सफर और थियेटर से भी थियेटर समीक्षक तक का सफर कैसे तय किया इसका एक पूरा सफरनामा है जिसे बड़ी ही सादगी और सरलता के साथ साझा करतीं हैं के. मंजरी। ज़िन्दगी को सहजता, प्रसन्नता,उन्मुक्तता और सबसे बड़ी बात खुले आकाश में विचरण करते हुए जीना है तो आप पढ़िए के. मंजरी के काव्य और लेखन को। आइये रूबरू होते हैं के. मंजरी जी से...

Q. लेखन की दुनिया में आने का आभास कब हुआ आपको?

सच कहूँ तो जीवन को कभी मैंने किसी एक दायरे में बाँधने की कोशिश नहीं की। मेरा जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जो आधुनिकता से ओतप्रोत तो था ही इसके अतिरिक्त साहित्यिक माहौल भी हमारे परिवार में था। जैसा कि आप हम सब भाई बहनों के नामकरण में भी देख सकते हैं। हमारे घर में एक बड़ी लाइब्रेरी थी। दादाजी स्व. श्री कन्हैयालाल जी श्रीवास्तव बैंक मैनेजर के पद से सेवानिवृत्त थे और पढ़ने के शौकीन थे व पिता श्री विजय कुमार श्रीवास्तव हिंदी,उर्दू और इंग्लिश के विद्वान थे और वे भी लिखा करते थे। देश विदेश की पुस्तकों से यह लायब्रेरी सुशोभित और सुसज्जित थी। शेक्सपियर,ग़ालिब,प्रेमचंद,विलियम वड्र्सवर्थ अरस्तु, प्लेटो,प्रसाद जैसे कई लेखक,कवि ग़ज़लकार दार्शनिक समीक्षक इस लाईब्रेरी की शान थे। मेरा अधिकतर समय दादा जी के साथ वहीं गुज़रता था। मेरे में पढ़ने की जिज्ञासा वहीं से जागी। मैं यह बताना चाहूँगी कि दादा जी और पिताजी के सानिध्य का प्रभाव मुझ पर यह पड़ा कि मैं थोड़ा-थोड़ा लिखने भी लगी और तो और 90 के दशक में जब घर में टीवी नहीं था तो दादा जी हमें अक्सर थियेटर शो दिखाने ले जाते थे मैं उनके साथ कई बार गयी। उनके साथ कई पारसी नाटक मैंने देखे कई बार थियेटर में कई बार खुले मंच पर। मेरा शौक इस दिशा में धीरे-धीरे क़दम बढ़ा रहा था जिससे मैं स्वयं अनजान थी। लैला-मजनू दादा जी के साथ ही मैंने देखा था। जब मैं इस माहौल से लिखने समझने को प्रेरित हुई और मैंने कुछ पंक्तियाँ कविताओं की लिखी तो दादा जी ने उन्हें नंदन, पराग, चम्पक बाल साहित्य में छपने दे दिया और जब कविता छपी तो मैं प्रेरित हुई मेरे लेखन को बल मिला। उस वक्त मैं 11 वर्ष की थी। मैं और ज़्यादा कल्पनाओं में शब्दों के ताने-बाने बुनने लगी। इस तरह लेखन में रूझान का श्रेय दादाजी को जाता है। कविता प्रकाशित होने पर उन्होंने मुझे डायरी और पेन दिया और यही कहा कि जो मन सोचे उसे इस पर अंकित कर देना। और इस तरह लेखन की दुनिया में मेरे क़दम बढ़ने लगे।

Q. आप कई भाषाएँ जानती हैं किस तरह यह भाषा ज्ञान विकसित हुआ आपका।

देखिए इस संदर्भ में सबसे पहले कहना चाहूँगी कि सीखने से ज़्यादा सीखने का शौक बहुत मायने रखता है अगर आप में जिज्ञासा है,जानने की ललक है तो कुछ मुश्किल नहीं। मुझे भाषाओं को सीखने का शुरू से शौक रहा है। किसी जगह से जुड़ना है तो उसका मर्म भाषा ही है जो सीधे मर्म से मन में उतरती है। मैं जहाँ जहाँ रही मैंने वहाँ की भाषा को पहले अपनाने की कोशिश की। जैसे ददिहाल से भोजपुरी,पिताजी के साथ हिंदी, उर्दू और इंग्लिश, ननिहाल से मैथिली, पटना से मगही, बेगूसराय से अंगिका और अभी तमिल मैं अपने जीवनसाथी के सानिध्य में सीख रही हूँ। इसी तरह हर भाषा से मेरी मित्रता बढ़ती जा रही है।

> **मशहूर नाटककार हेनरिक इब्सन ने कहा था कि कविता ईश्वर की भाषा है और मैं सौभाग्यशालिनी हूँ कि ईश्वर ने मुझे अपनी इस भाषा से नवाज़ा है और मैं इसी दैवीय भाषा में, इसी ज़ुबान में दुनिया से बात करना चाहती हूँ**
>
> **- के. मंजरी श्रीवास्तव**

Q. आपकी कविताओं का मर्म मुख्यतया किस रस किस धारा में बहता है?

कविमन खुले आकाश में विचरण करता है और मन के मौसम के अनुसार कविता का जन्म होता है यूँ तो मैं हर रस में लिखना पसंद करती हूँ जब जैसा मूड हो या पंक्तियाँ अनायास दिमाग़ में आ जायें लेकिन अधिकांशतः मैं विश्व शांति व समरसता पर लिखना पसंद करती हूँ चाहे श्रृंगार रस हो या वात्सल्य रस मेरी उन कविताओं में शान्त रस का पुट आ ही जाता है। मेरी हर रचना का अंत और अन्तर्मन विश्व शांति,सदभाव, समरसता का संदेश देता है एक बार फिर नाचो न इज़ादोरा 2009 की मेरी प्रसिद्ध कविता है जिसका मैं मंचन भी चाहती हूँ भविष्य में। इस कविता पर बहुत चर्चा व समीक्षा हुई है और यह जिस वक्त लिखी गयी तब भी प्रासंगिक थी और आज भी प्रासंगिक है। अफ़ग़ानिस्तान और तालिबान के इस विश्वस्तरीय विस्फोट के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता और बलवती हो उठी है इसकी कुछ पंक्तियाँ में बताना चाहूँगी...

मैं देना चाहती हूँ दुनिया को एक ऐसा नया धर्म
जिसमें कहीं जगह न हो नफ़रत और युद्ध के लिए
खून-ख़राबों के लिए, असलहों और मिसाइलों के लिए
मैं देना चाहती हूँ इस दुनिया को शैम्पेन और शहतूत
वोदका और कोगनाक की ख़ुमारी...

इस कविता की सफलता ये है कि मुझे काव्य जगत में अब इज़ादोरा भी कहते हैं। इसी को कुछ पँक्तियाँ और हैं जो मन को छूती हैं....

सुनामी के बाद की तबाही को देखने के लिए.
ताज में मारे गए किसी विदेशी माँ-बाप के बच्चे की
चीत्कार को सुनती हूँ
तो लगता है कि तूफ़ान के बाद की तबाही के बाद
नए जीवन के संचार के लिए बजाई है किसी ने
देसी तुरही पर विदेशी सिम्फ़नी
किसी ने बजाए हैं पयूज़न इस सिम्फ़नी के नोट्स पर
पर इस नवगीत के आगाज़ के बावजूद
नहीं हट पाते हैं सुनामी के बाद कराहते,
बिलखते लोग मेरी निग़ाहों से
भूखे, नंगे बच्चे दौड़े-भागे चले आ रहे होते हैं मेरी बांहों में
और मैं कोशिश कर रही हूँ हर बच्चे को
प्यार, प्यार का सन्देश देने की
अपने वर्जिन मातृत्व से
अपनी गोद में
मुझमें जाग उठता है वर्जिन मदर मेरी और
मदर टेरेसा का मिला-जुला रूप
और यह एक सुखद लम्हा भारी पड़ जाता है
मेरे पूरे दुःखी जीवन पर
और
मैं और ज़्यादा आनंद के साथ
थिरक उठती हूँ इज़ादोरा

Q. काव्य लेखन से थियेटर समीक्षक तक की यात्रा पर थोड़ा प्रकाश डालें?

जैसा कि मैंने आपको बताया कि मैं अक्सर दादा जी के साथ थिएटर शो देखने जाया करती थी तो मन के

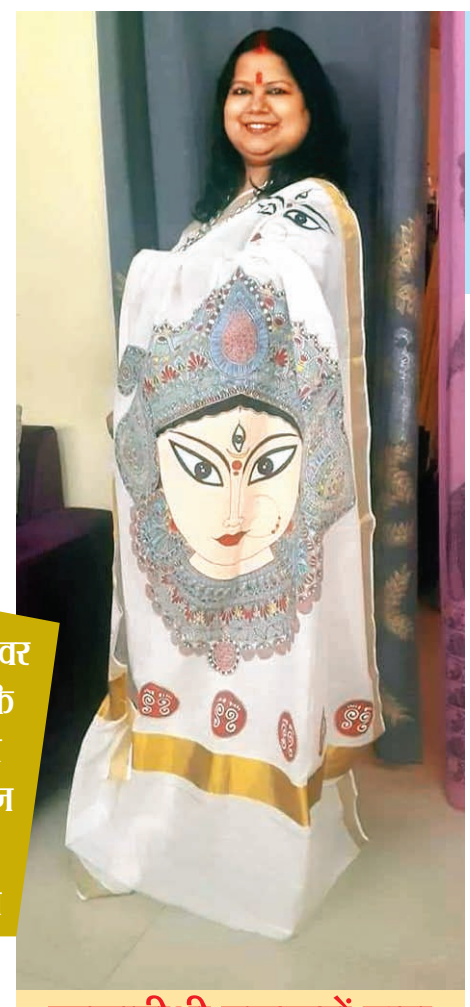

कलावीथी बुनकरों द्वारा निर्मित दुर्गा पूजा साड़ी

किसी कोने में थिएटर और नाटकों को लेकर एक जिज्ञासा और आकर्षण मेरे मन में शुरू से ही था। इस आकर्षण में इजाफा जब हुआ जब मैं दिल्ली आयी। पटना से दिल्ली की प्रेरणा का श्रेय मैं अपने एक मित्र सुभाष को देती हूं जो मेरी योग्यता और मेरे द्वारा लिखी गई कविताओं कृतियों का प्रशंसक थे और वह मुझसे कहता थे कि तुम्हारा स्थान पटना या बिहार में नहीं है तुम्हारा स्थान दिल्ली में है इसके लिए उन्होंने मुझसे झगड़ा भी किया । मुझे दिल्ली भेजा अंततः मैंने 2004 में दिल्ली का रुख लिया। ICCR से मुझे फैलोशिप मिली। चूंकि उस दौरान रहने की मेरे पास जगह नहीं थी अतः मंडी हाउस स्थित नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के हॉस्टल में मैं अपनी बहन पंखुड़ी के साथ रही। जब भी मैं फ्री होती थी तो वहां पर ड्रामा हो रहे होते थे उनको देखने जाती थी थिएटर शो में मेरा बहुत इंटरेस्ट शुरू से ही था और ऐसे में मुझे नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से जुड़ने का मौक़ा और माहौल दोनों मिला और मैं अक्सर मित्रों के बीच नाटकों को देखने के बाद मौखिक समीक्षा करती थी जो बहुत सराही जाती थीं ऐसे में कुछ मित्रों ने सलाह दी कि मुझे समीक्षा करने के विषय में आगे बढ़ना चाहिए और मैंने ऑरकुट उस वक्त चलन में था उस पर एक नाटक की समीक्षा डाली जिसे पढ़कर कथादेश जो हिंदी की जानी मानी पत्रिका है ने मुझसे संपर्क किया और मुझे भारत रंगमहोत्सव के लिए रिव्यू लिखने का ऑफर दिया इस तरह 2011 में मैं समीक्षक के रूप में स्थापित हुई। इसी तरह उन समीक्षाओं को जनसत्ता (इंडियन एक्सप्रेस समूह का दैनिक समाचार पत्र) ने मुझे पढा और मुझे रंगमंच समीक्षा कॉलम में लिखने के लिए प्रस्ताव दिया 2013 से 2019 तक मैंने अपनी सेवाएँ वहाँ दी हैं । इस दौरान मैं स्वतंत्र पत्रकार व थियेटर समीक्षक के रूप में कार्य कर रही हूँ । पत्र-पत्रिकाओं में मेरे लेख व समीक्षाएँ समय-समय पर प्रकाशित होती रहती हैं।

शैक्षणिक योग्यता

एम.ए. इतिहास
यूजीसी नेट लेक्चररशिप 2004
लाइब्रेरी फैलोशिप आईसीसीआर द्वारा

कार्यक्षेत्र व उपलब्धियाँ

- राष्ट्रीय स्तर की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था कलावीथी की संस्थापक एवं सैफ़ो बुक नामक संस्थान की संस्थापक।
- आठवें थियेटर ओलंपिक की ज्यूरी मेम्बर।
- आर. टी. राजन बेस्ट थिएटर क्रिटिक अवार्ड 2018 में पिछले कई वर्षों से कालिदास सम्मान की ज्यूरी मेम्बर।
- पिछले कई वर्षों से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा आयोजित किए जाने वाले भारत रंग महोत्सव की ज्यूरी मेम्बर।
- भारत रंग महोत्सव के दौरान आयोजित होनेवाले कार्यक्रम 'मीट द डायरेक्टर' की मॉडरेटर के रूप में कार्य
- बेस्ट थियेटर समीक्षक अवार्ड 2017 नटसम्राट थियेटर ग्रुप द्वारा
- जनसत्ता रंगमंच कॉलम में वर्षों तक रंगमंच समीक्षक।
- गेस्ट फैकल्टी जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी नई दिल्ली।
- पब्लिकेशन डिवीजन और नेशनल बुक ट्रस्ट में बतौर लेखक व अनुवादक के रूप में कार्य
- कई पत्र-पत्रिकाओं के लिए लेखन व समीक्षा
- 'एक बार फिर नाचो न इज़ादोरा' बहुचर्चित लम्बी कविता जो सदा प्रासंगिक थी, प्रासंगिक है और सदा प्रासंगिक रहेगी।जबतक विश्व शांति की ज़रूरत रहेगी तब तक यह कविता प्रासंगिक रहेगी।

Q. 'दरभंगा हाउस' आपका चर्चित संस्मरण रहा है इसके बारे में कुछ बताएँ!

जी हाँ दरभंगा हाउस मेरे कॉलेज का नाम है जो बिहार के पटना जिले में स्थित है यह दरभंगा हाउस दरभंगा महाराज ने बनवाया । यहाँ 22 साल पहले मैंने पढ़ाई की है। इसमें गुज़ारे हुए वक़्त को,यादों को मैंने मेरी पुस्तक दरभंगा हाउस में लिखा है। यह 50 पृष्ठ की पुस्तक है। मैंने उस दौरान के सभी संस्मरण साझा किए हैं। मैंने इसमें वहाँ के एज्यूकेशन सिस्टम,वहाँ की राजनीति छात्रों की स्थिति जैसे विषयों को इसमें उठाया है। यह श्वेतवर्णा प्रकाशन नोयडा से प्रकाशित हुई है। अभी इसका अनुवाद अन्य कई भाषाओं में आयेगा। इस पुस्तक की प्रतियाँ देश-विदेश में भी गयीं हैं। दुबई में इसके इंग्लिशवर्जन पर काम भी हो रहा है।

Q. कलावीथी के बारे में कुछ बताएँ ?

कलावीथी मेरी वह संस्था है जो हर आर्ट पर काम करती है इस वक्त कोरोना के कारण केवल बुनकरों पर काम कर रही है लेकिन इसमें परफॉर्मिंग आर्ट, फाइन आर्ट,एलाइड आर्ट के उन्नयन के लिए पर भी संस्था काम कर रही है। देश-विदेश से हाथकरघा बुनकर इस संस्था से जुड़ें हैं और इसकी हाथ की बनाई शाल और साड़ियाँ अन्य कई परिधान देश-विदेश में सप्लाई होते हैं। देश के कलाकारों को बुनकरों को पहचान देना और सही पारिश्रमिक दिलवाना ही संस्था का ध्येय है। मधुबनी,कलमकारी,हैंडलूम पट्टू चंदेरी सिल्क,पटोला कॉटन,लीलन,बनारसी,हैंड ब्लॉक प्रिंट,सिल्क बाय कॉटन अनेकों वैरायटी यहाँ उपलब्ध है नीचे दिए गए लिंक से कलावीथि से जुड़ा जा सकता है और ऑर्डर दिया जा सकता है।
https://www.facebook.com/361609327569611/posts/1346132825783918/

Q. आपके जीवन का कोई गौरवशाली क्षण और उपलब्धि जो आप पाठकों से साझा करना चाहती हैं ?

बिल्कुल जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षण था जब मैं भारत के महान रंगकर्मी श्री रतन थियाम जी से मिली

आप प्रसिद्ध नाटककार, रंगमंच निदेशक और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के पूर्व अध्यक्ष हैं। इन्होंने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के साथ कई नाटकों का निर्देशन किया। रतन थियाम पारम्परिक संस्कृत नाटकों को उनकी आधुनिक व्याख्या के साथ प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते हैं। इनसे मिलना मेरा सौभाग्य था। उनके साथ मैंने कई कार्यशालाओं में काम किया। जिसमें आसाम कार्यशाला मुख्य है। मैं इनकी प्रशंसक तो थी ही इसी के चलते संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के लिए मैंने रतन थियम पर 200 पन्नों का शोध किया है जिसका नाम 'रतन थियाम के नाटकों के सौंदर्यबोध के स्रोत' यह जल्द ही यह मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर से प्रकाशित भी होगा।

Q. आपके जीवन के मूल सिद्धांत क्या हैं जो युवा साहित्यकारों व कलाकरों के लिए मार्गदर्शन दे सकते हैं!

हर कलाकार जो किसी भी विधा से जुड़ा है उसे सबसे पहले सब्र और सहजता जीवन में लानी होगी सब्र का फल मीठा होता है और सहजता स्वभाव को सरल बनाती है। ये दोनों सफलता की राह में सहायक सिद्ध होते हैं। आप अपना काम करिये उसकी स्वयं विवेचना कीजिये। यहाँ मैं ज़िक्र करना चाहूँगी अवधेश प्रीत जी का जो हिंदी के बड़े साहित्यकार हैं जिनकी इन पंक्तियों ने मुझे बहुत प्रभावित किया कि....

अपने किये कृत्य को, कला को, लेखन को स्वयं सौ बार रिजेक्ट करो बाद में दुनिया आपको एक बार में एक्सेप्ट करेगी। इसी तरह मेरे परिचित उज्ज्वल भैया ने एक बार मुझे कहा कि लाइफ में टेंशन नहीं अटेंशन लेना ज़्यादा मायने रखता है। यह मेरे जीवन के मूलमंत्र बन गए और यही मूलमंत्र में आने वाली पीढ़ी को भी देना चाहती हूँ।

Q. महिला साहित्यकारों की साहित्य जगत में भूमिका को किस स्थान पर पाती हैं आप ?

यूँ तो समय के साथ स्त्री साहित्यकार ने अपना मुक़ाम समय-समय पर हासिल किया है लेकिन साहित्यिक मंच पर आज भी महिला साहित्यकारों का प्रतिशत बहुत कम ही देखने को मिलता है **ऐसे में मुझे नाइजीरिया के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, कवि,आलोचक चिनुआ अचेबे की पंक्तियाँ याद हो आयीं हैं कि...**

'जब तक हिरन अपना इतिहास खुद नहीं लिखेंगे तब तक हिरणों के इतिहास में शिकारियों की बहादुरी के किस्से गाए जाते रहेंगे।'

यह पंक्तियाँ यहाँ चरितार्थ होतीं हैं कि स्त्री ही स्त्री की तरक्क़ी की राह में बाधक होती है और स्त्री से स्त्री के बीच की ये दूरी पुरुषप्रधान समाज को शक्ति देती है। अतः किसी भी क्षेत्र में बराबरी का दर्जा स्त्री समाज खुद अपनी सोचने समझने की क्षमता बढ़ाकर ही पा सकता है।

Q. साहित्य जगत की दुनिया में अपने जीवनसाथी का कितना सहयोग पाती हैं ?

मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ कि श्री गोपाल कृष्णन के रूप में मुझे सुलझे हुए,सरल स्वभाव के और सबसे बड़ी बात विद्वता से परिपूर्ण पति मिले हैं जो मेरी हर कृति की समीक्षा करते हैं,मार्गदर्शन करते हैं और मुझे लिखने को प्रेरित भी करते हैं इनकी एक बात जो मुझमें शक्ति भरती है मैं अन्य कई विषयों पर कार्य कर रही हूँ ऐसे में इन्होंने मुझसे कहा कि...

आप लिखिए आप लिखने के लिए बनी हैं' इनकी अर्धांगिनी होने से इनकी आधी शक्ति भी मुझे मिली है जिससे कि मैं हर विधा पर काम करने के लिए प्रेरित हुई हूँ। मेरा संस्थान कलवीथि भी इसी शक्ति का परिणाम है।'

Q. आपका लेखन किस दिशा में काम कर रहा है, अपने आगामी लेखन के बारे में बताएँ ?

जल्द ही ऐतिहासिक नाटक पर काव्य के प्रतिरूप में आधारित कविताएं आएंगी जो नाटक से कविता और कविता से नाटक की यात्रा तय करती हैं।

मेरी कविता 'वा नो कोकोरो' की वह पंक्तियाँ जो मेरे मन में हमेशा चलते हुए विश्व शांति और सदभाव की बात करती हैं। ये पंक्तियाँ मेरा पूरा व्यक्तित्व उजागर करती हैं. मैं वस्तुतः ऐसी ही हूँ. प्रकृति के कण कण से प्रेम करने वाली, प्रकृति के लिए सौन्दर्य, शांति और सद्भाव चाहनेवाली. वा नो कोकोरो एक जापानी शब्द है जिसका अर्थ होता है विश्व शांति और सद्भाव की आत्मा। मैं पूरे विश्व के लिए शांति, सौहार्द्र और सद्भाव की कामना और प्रार्थना करती हूँ। ये पंक्तियाँ मेरी कविता 'वा नो कोकोरो' से ली गई हैं जिन्हें मैंने जापानी नाटक 'सकुरा' देखने के बाद लिखा था। मेरी रचना इज़ादोरा की तरह ही यह कविता मेरे दिल के बेहद करीब है। चूंकि मेरे पतिदेव भी विश्व शांति के आकांक्षी हैं इसलिए उन्हें भी मेरी यह कविता बहुत पसंद है। हम दोनों के मन का विश्व शांति का यह भाव ही हमें लगातार करीब लाता गया और हम दोनों ने 2017 में एक-दूसरे को जीवनसाथी बनाने का फैसला कर लिया। कुछ पंक्तियाँ साझा करती हूँ....

'युगों से मेरे मन-मस्तिष्क की शक्ति प्रकृति की
संगति में जी रही है
जो कि मेरे जीवन की हर मौसम की बानगी है
मेरे लिए प्रकृति ईश्वर का जन्म है
ब्रह्मांड के सर्वस्व शुद्धिकरण के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना
करती हूँ और हमारी पारंपरिक संस्कृति,
जो कि हमारे जीवन का मर्म है,
प्रकृति को 'वा नो कोकोरो' के रूप में प्रतिबिंबित करती है
अपने इस मन्त्र 'वा नो कोकोरो' के साथ मैं विश्वभर में
सौन्दर्य, सद्भाव और शान्ति की आधारशिलाओं में से एक
होने की आशा करती हूँ।'

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

05

जयपुर ≫ 14 अगस्त व 21 अगस्त, 2021

भावनाओं की अभिव्यक्ति का भंडार हैं अंतर्राष्ट्रीय कथक नृत्यांगना पंखुड़ी श्रीवास्तव

पारिवारिक परिचय

पिता श्री विजय कुमार श्रीवास्तव एग्जीक्यूटिव इंजीनियर

माता श्रीमती रेनू श्रीवास्तव कुशल व समर्पित गृहणी होने के साथ-साथ आर्ट व पेंटिंग में अपना दखल रखने वाली सशक्त महिला।

छः भाई-बहन जिसमें...

1. के. मंजरी श्रीवास्तव (लेखिका, कवियत्री, समीक्षक)

2. मयूरी श्रीवास्तव (क्रिएटिव राइटर व पेंटर दुबई)

3. पंखुड़ी श्रीवास्तव (कथक नृत्यांगना)

4. रोशन श्रीवास्तव (टेक्निकल सपोर्ट, एम.एन.सी)

5. रौनक श्रीवास्तव एमबीए बैंकिंग वर्क

6. विभावरी श्रीवास्तव (टेक्सटाइल डिज़ाइनर व पेंटर)

परिवार की बेटियाँ क्रिएटिव और आर्ट फील्ड में अपना परचम फहराती हैं तो परिवार के बेटे टेक्निकल फील्ड में अपना लोहा मनवाते रहे हैं। साहित्यिक सोच विचार से ओतप्रोत यह परिवार समाज को अपना बहुत कुछ देने में सफल रहा है।

शैक्षणिक योग्यता

स्नातकोत्तर : इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ डिप्लोमाः कथक केंद्र न्यू दिल्ली

कला प्रदर्शन व उपलब्धियाँ

- 2007 से आज तक कथक महोत्सव, कथक यात्रा दीक्षांत समारोह जैसे बड़े-बड़े इवेंट्स में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुतियाँ दिल्ली मुंबई, इंफाल उत्तर प्रदेश,जयपुर बिहार केरला मैंगलोर,बेंगलुरु त्रिचुर,साउथ अफ्रीका और दुबई
- तालमाला, कॉन्सुलेट जनरल ऑफ इंडिया दुबई द्वारा आयोजित कई राष्ट्रीय उत्सव में भागीदारी
- हाई कमीशन ऑफ इंडिया एंड एसवीसीसी जार्जटाउन गयाना साउथ अफ्रीका द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भागीदारी
- बेस्ट कथक परफॉर्मेंस युवा प्रतिभा खोज सम्मान 2003 में इस प्रतियोगिता को डिपार्टमेंट ऑफ आर्ट कल्चर एंड यूथ गवर्नमेंट ऑफ़ बिहार ने आयोजित किया।
- कथक केंद्र न्यू दिल्ली से स्कॉलरशिप 2006 से 2011 तक
- कथक नृत्य प्रभाकर,प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद द्वारा सम्मान।
- कथक निपुण वी.एन.भातखंडे संगीत विद्यापीठ लखनऊ से सम्मान।
- एसपीआरई, अंतरराष्ट्रीय सामाजिक उत्कृष्टता सम्मान, 2018 से सम्मानित ।
- महादेवी वर्मा स्मृति सम्मान 2021 से सम्मानित।

कार्य क्षेत्र

- विजिटिंग डांस फैकल्टी कथक में टेकनिया इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट एंड डिजाइन न्यू दिल्ली ■ कथक केंद्र रिपोयट्री, नई दिल्ली ■ दिल्ली प्राइवेट स्कूल अकेडमी दुबई ■ गुरुकुल दुबई ■ आईसीसीआर न्यू दिल्ली ■ आई सी सी आर, नई दिल्ली की ओर से वर्ष 2018 से 2020 तक भारत का प्रतिनिधित्व भारत के उच्चायोग तथा एस वी सी सी, गुयाना के माध्यम से दक्षिण अमेरिका में किया है।

कथक को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में पंखुड़ी का योगदान अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। हिलव्यू समाचार में जानिए पंखुड़ी की सफल कथक यात्रा...

Q. कथक नृत्यांगना के रूप में आप आज जिस मुक़ाम पर हैं । ऐसी कौनसी शक्ति थी जिसने आपको अपने मार्ग से डिगने नहीं दिया?

बेहद महत्वपूर्ण प्रश्न आपने पूछा है वाकई सामाजिक दृष्टिकोण में कला चाहे साहित्य की हो या संगीत की अभिनय की हो या कोई भी और विधा हो... समाज में इसे करिअर के रूप में नहीं देखा जाता लेकिन मैं ऐसे परिवार से आती हूँ जहाँ शिक्षा और कला दोनों के मायने समझे जाते हैं। कायस्थ परिवार की होने की वजह से शिक्षा तो महत्वपूर्ण थी ही लेकिन साहित्यिक माहौल होने की वजह से परिवार में मेरी कला को लेकर कोई अड़चन कभी नहीं आयी। हाँ मेरी पढ़ाई के दौरान मम्मी पापा के सामने दूसरे परिवारों और मिलने-जुलने वालों से इस तरह के जुमले आया करते थे कि बेटी नृत्य करती रहती है पढ़ाई नृत्य को फिर तुम उतना समय नहीं दे पाओगी । नृत्य और मनोविज्ञान दोनों मेरे समक्ष अपना-अपना गणित लेकर खड़े हो गए। बिना किसी देरी के मैंने एक झटके में नृत्य का हाथ थाम लिया और मनोविज्ञान को विदा दे दी। इस तरह मैंने समाजशास्त्र विषय चुना जिसे मैं पढ़ते हुए अपनी नृत्य कला को जारी रख सकती थी।

जीवन के इन दोनों महत्वपूर्ण निर्णय पर मुझे कभी अफ़सोस नहीं हुआ।यही मेरा सुकून है कि मैंने अपना लक्ष्य कभी नहीं छोड़ा।

Q. ज़िंदगी के किसी टर्निंग प्वाइंट के बारे में जिक्र करना चाहेंगी?

2004 में जब भारतीय नृत्य कला मंदिर शिव जी

तालामाला, कॉन्सुलेट जनरल ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय उत्सव दुबई में प्रस्तुति...

जब इस भागदौड़ से जूझते हुए देखा तो मुझे एक तरफा निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया और फिर मैंने नृत्य के लिए दिल्ली यूनिवर्सिटी चुन लिया।

यहाँ से मेरा सफर केवल और केवल नृत्य के लिए शुरू हुआ। 2005 से 2011 तक मेरा यह कोर्स कंप्लीट हुआ इसी दौरान मैंने खैरागढ़ यूनिवर्सिटी से नृत्य का पत्राचार द्वारा कोर्स भी किया। मैंने अपनी पहली जॉब 2012 में टेक्निया स्कूल से स्टार्ट की और वहीं पर आर्ट डिपार्टमेंट में डॉक्टर मधु अग्रवाल के सहयोग से मैंने गूंगे बहरे बच्चों के लिए भी स्पेशल स्कूल में जाकर नृत्य का प्रशिक्षण दिया। वहां पर मेरा पार्ट टाइम हुआ करता था जो मैं टेक्निया स्कूल की तरफ से जाया करती थी लेकिन यह मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव था क्योंकि अपनी भाव भंगिमा उसे मैंने उन बच्चों के बीच में अपनी जगह बनाई और यह कहने में मुझे खुशी होगी कि मैंने उन बच्चों से भी बहुत कुछ सीखा। आंगिक अभावों के बावजूद भी मन की बात शारीरिक संकेत और सांकेतिक भाषा में कैसे की जाए यह मैंने वहीं सीखा जिसने मेरे नृत्य की भाव-भंगिमाओं में अभिव्यक्ति के चार चाँद लगा दिए।

Q. दुबई जाने का विचार कैसे मन में आया?

भारत की इस नृत्य कला को विश्व स्तर पर अंकित करने की मेरी इच्छा थी लेकिन मेरी इस इच्छा को बल मिला एक छोटी सी घटना से 2012 कथक केंद्र रिपोयट्री में मैंने फुल टाइम जॉब जॉइन कर लिया था । उस दौरान साउथ अफ्रीका से कोई टीम मिनिस्ट्री की तरफ से आई जो यहां से 10 कोरियोग्राफर को सेलेक्ट करके साउथ अफ्रीका ले जाने वाली थी यह ट्रिप 10 दिन का था यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि का मार्ग था। मैं भी इसमें भागीदार बनना चाहती थी प्रेजेंटेशन के लिए और केंद्र में सभी को विश्वास था कि मेरा सिलेक्शन तो पक्का है। लेकिन उसमें मुझे सेलेक्ट नहीं किया गया। बहुत जद्दोजहद के बाद मुझे उत्तर मिला कि आप इसके लिए सूटेबल नहीं है। काफ़ी पूछताछ के बाद कारण बताया गया कि मेरी लंबाई बहुत ज्यादा है हालांकि कारण बिल्कुल इससे अलग थे जो सामान्यतया भाई-भतीजावाद से ही प्रभावित होते हैं। इस घटना ने मुझे अपने आप को साबित करने के लिए प्रेरित किया और एक ऑर्गेनाइजेशन शुरू किया है जो कथक नृत्य के साथ साथ आर्ट व डिज़ाइन कोर्स के लिए भी काम करता है जिसमें मेरी सिस्टर्स मेरा सहयोग करती हैं और कला के क्षेत्र में इस में करियर बनाने वालों के लिए मार्गदर्शन का यह काम करता है। हमने इसमें कई कोर्स चलाएं हैं जो एकेडमिक है और इसके अलावा जो लोग केवल हॉबी के उद्देश्य से सीखना चाहते हैं उनके लिए भी हमने उनकी सुविधानुसार कोर्स और समय को ध्यान में रखते हुए प्रोजेक्ट कोर्स डिज़ाइन किया है। कोरोनाकाल के कारण अभी यह ऑनलाइन कोर्सेज हैं जल्द ही इनकी मैनुअल क्लास भी शुरू की जा सकेंगी। इससे जुड़ने के लिए इसका लिंक इस प्रकार है...

https://www.facebook.com/sridaa-tri.creations/https://instagram.com/sridaatri.creations?utm_medium=copy_link

Q. डिजिलटाइजेशन और इस दौर की एडवांस टेक्नोलॉजी को आप आज के संदर्भ में क्या स्थान देती हैं? आज के युवाओं के लिए कोई संदेश?

यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जिस वक्त मैंने अपना संगीत व नृत्य शुरू किया उस दौरान डिजिटल वर्ल्ड और टेक्नोलॉजी इतनी ज्यादा इंप्रूव नहीं थी और हमें अपने आप को प्रूफ करने के लिए फिजिकली और मैनुअल भागदौड़ करनी होती थी लेकिन आज दुनिया मुट्ठी में आ गयी है और आप देखिए के छोटे से छोटे गांव,छोटे से छोटे कस्बे,दबे छुपे क्षेत्र से भी प्रतिभाएं निकल कर पूरे देश नहीं पूरे विश्व में धूम मचा रही हैं। इसका सबसे ज्यादा श्रेय डिजिटलाइजेशन और इस एडवांस टेक्नोलॉजी को ही जाता है। बस इसके लिए मैं एक छोटी सी बात कहना चाहूंगी कि जो वास्तविक प्रतिभाएँ है,शुद्ध और शास्त्रीयता से परिपूर्ण हैं, वास्तव में अपना उच्च स्थान रखती हैं,सैद्धांतिक और शैक्षणिक रूप से बहुत ज्यादा काबिल है उन्हें वह स्थान मिलना चाहिए जिसके लिए वो डिज़र्व करते हैं,जिसके वे वास्तविक हक़दार हैं। शोहरत काबिलियत का आईना नहीं होती कि ज़्यादा

Q. आप एक बहुत बड़ी कथक नृत्यांगना है और नृत्य जगत में आपने अपना लोहा भी बनवाया है। अपनी ज़िन्दगी को किस नज़र से देखती है आप ?

जिंदगी ईश्वर के द्वारा दिया गया एक महत्वपूर्ण तोहफा है अब इस तोहफे को हम कितना सहेज कर रख पाते हैं,सरलता और सहजता से जीते हैं और सफलता की तरफ बढ़ते हैं यह मायने रखता है। कहते हैं ना कि 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा' तो वाकई जब हमें मानव जीवन मिला है तो उसकी सार्थकता इसी में है कि हम इसे खुल कर जिएं और इसे उस मुकाम तक पहुंचाने में सफल हों कि दुनिया से जाने के बाद भी हम जाने जाएं। मेरी ज़िन्दगी के मायने नृत्य और संगीत है और कहते हैं किसी भी कला को जीने के लिए हम जितना शान्त, सरल,सहज और स्वाभाविक होते हैं हमारी कला उतनी ही निखरती और चमकती है और मैं अपनी ज़िंदगी में यह सरलता और सहजता हमेशा बनाये रखना चाहती हूँ।हाँ ! ज़िन्दगी को भरपूर जीना ही असल मायने में ज़िंदगी है और अपने अनुसार,अपनी चाहत के अनुसार जीना और उसे सही दिशा में ले जाना भी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि मन को सुकून तभी मिलता है जब आप अपनी ज़िंदगी को अपने अनुसार ढाल पाएं,आकार-प्रकार दे पाएं,अपना संपूर्ण दे पायें। मैं अपनी ज़िंदगी से बेहद संतुष्ट हूँ।

Q. नृत्य के आँगन में पाँव थिरकने की यात्रा कैसे शुरू हुई ज़रा इस बारे में बताएं।

मेरी पारिवारिक पृष्ठभूमि संगीत से नहीं आती लेकिन जब मैं लगभग 8 वर्ष की थी उस वक्त एक मूवी आई थी साजन जिसमें माधुरी दीक्षित जी का नृत्य 'तू शायर है मैं तेरी शायरी' बहुत प्रसिद्ध हुआ था और उसमें माधुरी जी का यह नृत्य नृत्यकला के लिए मिसाल था। जब भी वह गाना टीवी पर आता था तो उसे देखकर मेरे पाँव खुद ही थिरकने लगते थे। यही नृत्य सूत्रधार बना मेरी जीवन धारा का जिसका बहाव मुझे आज यहाँ ले आया।

मेरी इस कला को देखते हुए मम्मी पापा ने मुझे पूरा सपोर्ट किया और नृत्य सिखाने हेतु मेरे लिए व्यवस्था भी की। बरौनी बिहार के ही गुरु श्री सुदामा गोस्वामी जी से मैंने 6 साल तक नृत्य सीखा और अपनी पढ़ाई भी जारी रखी लेकिन कुछ समय बाद पढ़ाई के कारण मुझे पटना आना पड़ा मगर नृत्य वहाँ भी जारी रहा।

के क्षेत्र में बिछड़ जाएगी और फिर जब मुख्य परीक्षाएं होती थी तो मुझे अपने नृत्य को विराम देना होता था ऐसे में मुझे बहुत तकलीफ भी होती थी लेकिन जो मेरे बचपन के गुरु थे गोस्वामी जी उनको श्रेय देना चाहूँगी कि आगे पढाई जारी रखने के लिए पटना छोड़ते वक्त जब मैं अपनी मां के साथ उनसे मिलने गई तब मां से उन्होंने कहा कि इसका रुझान नृत्य की ओर है आप अवश्य पढ़ाई करवाएँ, शैक्षणिक क्षेत्र में आगे बढ़ाएँ लेकिन इसकी इस कला को मरने मत देना। यह जीवन में बहुत आगे जा सकती है। इसकी पैरों की थिरकन में जो शक्ति है,जो ओज है वह बहुत कम बच्चों में देखने को मिलता है और उनकी यह बात मेरी मां के मन में बैठ गई और उसके बाद पटना आने के बाद अपनी पढ़ाई के साथ-साथ मैंने अपना नृत्य जारी रखा। इस तरह पदमश्री शंभू महाराज जी के बड़े बेटे श्री कृष्ण मोहन महाराज जी से मैंने आगे का नृत्य सीखा और वह मेरे एक आदर्श गुरु भी हैं। गुरु जी गोस्वामी जी की बात मन में इस तरह पैठ गयी थी कि नृत्य मेरी प्राथमिकता बन गया था और जिस तरह अर्जुन का लक्ष्य मछली की आँख था उसी तरह मेरा लक्ष्य,मेरा जीवन नृत्य को समर्पित हुआ।

Q. नृत्य के इस हवन में क्या-क्या आहुतियाँ देनी पड़ीं आपको?

जी हां जब भी हम जीवन की दिशा में अपने लिए भी मुकाम हासिल करने जा रहे होते हैं तो बहुत कुछ त्यागना पड़ता है बहुत मोह छोड़ना पड़ता है और आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है वास्तव में मैंने कई आहुतियाँ दीं हैं इस हवन की पूर्णता के लिए। यहाँ दो निर्णयों का मैं ज़िक्र करना चाहूँगी।

पहला कि जब मैं 10th क्लास में 80 प्रतिशत से पास हुई तो पूरे घर में एक बहुत अच्छा माहौल था और मैं साइंस लेना चाहती थी लेकिन पारिवारिक निर्णय था कि अगर तुम कला के क्षेत्र में अपना सर्वस्व दे रही हो तो साइंस लेकर तुम उसके साथ न्याय नहीं कर पाओगी और परिवार के इसी निर्णय को मैंने अपना निर्णय बना लिया और साइंस के प्यार को छोड़ते हुए मैंने नृत्य के आगोश में अपना जीवन समर्पित कर दिया। परिवार के इस निर्णय पर मुझे कभी पछताना नहीं पड़ा, यह कहते हैं मुझे गर्व होता है।

दूसरा वाक्या उस वक्त घटा जब मैं ग्रेजुएशन में प्रवेश लेने की तैयारी में थी। मैं मनोविज्ञान विषय लेना चाहती उस वक्त मुझे स्वयं को निर्णय लेना था क्योंकि मैं कॉलेज के परिसर में खड़ी थी और मित्रों के सुझाव थे कि

तालामाला, कॉन्सुलेट जनरल ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय उत्सव दुबई में सम्मान...

एस पी आर ई, अंतरराष्ट्रीय सामाजिक उत्कृष्टता सम्मान, 2018 से सम्मानित ।

मिश्रा के पास में नित्य सीख रही थी और साथ ही समाजशास्त्र में जब मैं पटना यूनिवर्सिटी से एम.ए. कर रही थी और यूनिवर्सिटी की टॉपर स्टूडेंट भी थी। उसी दौरान एक न्यूज़पेपर में कथक डांस के लिए प्रवेश आया और मंजरी दीदी ने मुझे उसमें प्रवेश के लिए प्रोत्साहित किया और उस इंटरव्यू मेरा एक बार में ही सिलेक्शन हो गया लेकिन इसके लिए मुझे दिल्ली जाकर ही हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करनी थी और रेगुलर क्लासेस थी यह कोर्स 5 वर्ष का था और एम ए 2 वर्ष का ऐसे में मुझे एक बड़ा निर्णय लेना पड़ा क्योंकि मेरे लिए यह बहुत बहुत भागदौड़ वाला समय हो गया था मुझे इधर समाज शास्त्र क्लासेस के लिए वापस आना पड़ता था पटना और दिल्ली में मेरी रेगुलर क्लासेस चल रही थी ऐसे में मम्मी ने मुझे उसके बाद मैंने दुबई में एक इंटरव्यू दिया जहां पर मेरा 2014 में एक स्कूल में सिलेक्शन हो गया एक कथक टीचर के रूप में लेकिन वहां जाकर भी मन शांत नहीं रहा क्योंकि मैं केवल एक सब्जेक्ट टीचर नहीं बनना चाहती थी मुझे अपने क्षेत्र में महारत हासिल करते हुए एक मुकाम हासिल करना था और वहां पर मैंने 2015 में गुरुकुल में इंटरव्यू दिया जो नृत्य कथक शिक्षा का ही एक बहुत बड़ा केंद्र है वहां पर भी मेरा सिलेक्शन हो गया। 2015 से 2017 दिसंबर तक मैंने वहीं पर अपनी सेवाएं दी और वेकेशन के दौरान जब मैं इंडिया आई हुई थी उस दौरान मैंने आईसीसीआर इंडिया में ही अपना इंटरव्यू दिया और मैं सलेक्ट हो गयी।

2020 में मैंने अपना श्री दात्री क्रिएशन के नाम से

लाइक्स मिलने से आप क़ाबिल हो जाते हैं, किसी का वीडियो वायरल हुआ और वह छा गया लेकिन क्या वह आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणास्पद होगा? यह एक गम्भीर विषय है जिस पर जल्द काम शुरू हो जाना चाहिए।

मैं युवा वर्ग से बस एक ही बात कहना चाहूँगी कि मंज़िल पाने की यात्रा भले लम्बी हो लेकिन सार्थक होनी चाहिए पगडंडी से सफलता जल्द हाथ लग सकती है लेकिन सहजता और सूकून सही दिशा और सही मार्ग पर चलने से ही हासिल होते हैं। अतः शॉर्टकट का मार्ग न चुनें।

साक्षात्कारकर्ता :
शालिनी श्रीवास्तव

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

06

जयपुर >> 14 अगस्त व 21 अगस्त, 2021

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार

बच्चों, कुछ दिनों पहले अख़बारों में अपने ' स्नूपी' और उसके दो अन्य साथियों नॉडी व पिंटू के एयरपोर्ट सिक्योरिटी की ड्यूटी से रिटायर होने की खबर आई थी । जानते हो न किसकी बात कर रही हूँ? नहीं जानते? चलिये मैं बताती हूँ।

हमारी खूबसूरत दुनिया के दोस्त

ये तो आप जान ही चुके हैं कि सैंकड़ों-हज़ारों सालों से डॉग्स के एंसेस्टर्स मनुष्य के साथी रहे हैं , जो अपनी सूंघने और सुनने की अप्रतिम क्षमता के कारण उनके साथ शिकार में मदद किया करते थे । ये हम इसलिए जान पाये कि एक्सकेवेशन के दौरान स्टोन-एज की गुफाओं में इंसान के साथ प्रिमिटिव-डॉग्स की हड्डियाँ भी पाई गई थीं । डॉग्स की ये शक्ति आज भी बरकरार है और इसी वजह से सिक्योरिटी सर्विसेज़ में डॉग्स अद्भुत योगदान देते हैं ।

इन्हें हम लोगों से फ़िफ़्टी टाइम्स ज़्यादा सेंट रिसेप्टर्स से नवाज़ा गया है, नतीजतन इनके सूंघने की क्षमता हमसे दस हज़ार से एक लाख गुना एक्यूट होती है । लेकिन ये इनकी नाक की साइज़ पर निर्भर करता है। अब जितने लंबे

स्नाउट्स होंगे, उतने ही ज़्यादा सेंट-डिटेक्टिंग-सैल्स आ पायेंगे न नोज़ में , है न बच्चों! तो जानते हो सबसे ज़्यादा बड़ी नाक किस ब्रीड की है? वो है ब्लड-हाउंड की । ज़रा सोचिए, तीन सौ मिलियन सेंट-रिसेप्टर्स होते हैं इनके ; और इनसे ज़रा से कम होते हैं ब्लूटिक-कूनहाउंड,लैब्राडोर-रिट्रीवर और जर्मन -शेपर्ड के। है न मज़ेदार बात ?

ये क्षमता इतनी अद्भुत होती है कि ये इंसानों के इमोशन्स तक पहचान जाते हैं कि हम भयभीत हैं या उदास हैं या चिंतित हैं ।

चार महीने के पपी को किसी ख़ास चीज़ को सूंघने के लिये ट्रेन किया जा सकता है जिससे ये हवा के साथ बहती कई तरह की खुशबूओं में से उस ख़ास खुशबू को पहचान कर हमारी मदद कर सकें। ड्रग्स, एक्सप्लोज़िव-कैमिकल्स, यहाँ तक कि इंसानों में कैंसर तक को डिटेक्ट करने के लिए रिसर्चर्स ने डॉग्स को सफलतापूर्वक ट्रेन किया है। अगर कंडीशंस सही हों तो ये बीस मील दूरी तक की वस्तु सूंघ सकते हैं।

बस इसी वजह से सिक्योरिटी सर्विसेज़ में ख़ास तौर पर 'डॉग-स्क्वैड्स होते हैं , जैसे कि ' सेंट्रल इन्डस्ट्रियल सिक्योरिटी फ़ोर्स ' का डॉग स्क्वैड, जिसमें हमारा स्नूपी काम करता था ।

स्नूपी , एक कॉकर -स्पेनियल ब्रीड का डॉग् है जो अपने साथियों से कहीं ज़्यादा जल्दी एक्सप्लोज़्विस को डिटेक्ट कर लेता था और अपनी उम्र के दस साल इसने सेवा की । इनको अब एक-एक साल के पॉच डॉग्स अपनी सेवाएँ देंगे।

बच्चों, राँची में इन्हें ट्रेन करने के लिए 'कैनाइन -ट्रेनिंग सेंटर ' है जहाँ चार से छः महीने के पपीज़ को छः महीने तक इस बात के लिए प्रशिक्षित किया जाता है कि कैसे तुरंत किसी एक्सप्लोज़्वि को डिटेक्ट किया जाये । एक वर्ष के होते-होते ये अच्छी तरह सब सीख लेते हैं और फिर इन्हें देश भर के डॉग्स--स्क्वैड्स में भेज दिया जाता है । इनका फिर रोज़ ग्रूमिंग सेशन भी होता है । तीन सौ ग्राम मटन की खुराक दी जाती है इन्हें। दिन में दूध-रोटी भी खाते हैं हमारे ये वफ़ादार दोस्त । आपको पता है कि अपने देश के मशहूर क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी स्नूपी के बहुत बड़े फैन रहे हैं! जब भी वो दिल्ली से फ़्लाइट लेते थे तो स्नूपी से मिलने ज़रूर जाते थे ।

देश की सेवा से जब ये रिटायर होते हैं तो इनका ऑक्शन किया जाता है और किसी अच्छे घर में दे दिया जाता है । ज़्यादातर यही होता है कि इन्हें इनके हैंडलर्स ही ले लेते हैं, आख़िर इतने सालों साथ काम करके एक प्यार भरा बांड तो दो स्थापित हो जाता है दोनों के बीच !

तो अगली बार कुछ नयी जानकारी लाती हूँ , तब तक के लिए टा-टा!

डॉ. कविता माथुर

कविता

देश मेरा...

सब से प्यारा देश मेरा
जग से न्यारा देश मेरा
कुर्बानी दी है वीरों ने
जवानी दी है वीरों ने
तब यह आज़ादी पाई है
भारत मां तब मुस्काई है
तिरंगा लहर लहर लहराया है
लाल किले पर छाया है
दुनिया की नज़र हम पे है
दुनिया की आस हमसे है
देश को फिर विश्वगुरु बनाना है
तिरंगा शान से लहराना है
आओ वीरों को नमन करें
आज़ादी पर हम मनन करें ।

शशि पाठक, जयपुर

आध्यात्मिक मल्हार

ज़िंदगी भी अजीब कशमकश है
कभी मौत से जीवन की गुहार ...
तो कभी ज़िंदगी से मौत की मनुहार
भीगा भीगा सा ये मन
कभी खुशी सेआच्छादित
तो कभी दुखों का पहाड़
सुख देह को सुकून देते
तो दुख झकजोर देतेहै अन्तःस्थल को
सावन का आना देता
प्रकृति को हरीतिमा
सूखे मन को जो सावन हर्षाये
वो आध्यात्मिक मल्हार कोई सुनाये
भीगे जिसमें रूह और तन
मिल जाये सब बिछड़े हुए मन।

रश्मि वैभव गर्ग, कोटा राजस्थान

हम भारत के सिपाही

हम भारत के सच्चे सिपाही ।
हिन्दू,मुस्लिम सिख ईसाई ॥
भारत माता की सन्तान हम ।
है आपस में भाई-भाई ॥

झण्डा हरा हो या भगवा ।
सबसे बड़ा तिरंगा झण्डा ॥
मंदिर मस्ज़िद या गुरुद्वारा ।
क्या मौलवी और क्या पण्डा ॥

राष्ट्र धर्म सिखाता हमको ।
करें देश की रक्षा मिलके हम ॥
मिटाये अशिक्षा का अंधियारा
नवयुग का सूरज बने हम ॥

प्रगति, सेंट एन्सलेम, पिंकसिटी सी.सै. स्कूल, जयपुर

'मेरी बहना'

फूलों का हार काजल श्रंगार मेरी बहना
ईश्वर का दिया कीमती उपहार मेरी बहना।

माँ की परछाई पापा की अच्छाई
तुझमें है जीवन की सच्चाई
मेरे ख़ानदान की शान
मेरी बहना मेरा अभिमान
तुझे देख के मेरे होंठों पे खिलती है हंसी
मेरी ज़िंदगी तू ,तू ही मेरी खुशी
तुझ सा ना कोई प्यारा तेरा क्या कहना।

प्रेम वात्सल्यता की मूरत
दुनिया की सबसे प्यारी सूरत
गंगा सी पावन
सावन सी सुहावन
तितली सी चंचल
तुझसे मेरे जीवन में मंगल
मेरी खुशियों की तू ही वाहना
तुझसा ना कोई प्यारा तेरा क्या कहना

एक दिन मुझे छोड़ अपने पिया घर जाएगी
सच कहता हूं तू बहुत याद आएगी
धूमधाम से तेरा ब्याह रचाऊंगा,
चांद तारों से तेरी डोली सजाऊंगा,
राखी के दिन तू ज़रूर आना
अपने भाई को कही भूल ना जाना
दूर रहके भी सदा मेरे दिल में रहना।

पूजा 'बहर'(नेपाल)

"रे भगत सिंह"

मां के गर्भ में ही
पढ़ के आया
सबक वतन परस्ति का
रे मेरे भगत सिंह
संपूर्ण यौवन में
किया बलिदान
तूने अपनी हस्ती का

मादरे वतन का जोश
ही बस तेरे लहू में
बहता होगा
उस स्वप्निल उम्र के
सुनहरे सपनों को
कैसे तू ने रोका होगा

रे मेरे भगतसिंह
बस एक बार हृदय में
तेरे आना चाहूं
कच्ची उम्र के उन उन
पक्के निर्णय को
मैं पढ़ना चाहूँ

रे मेरे भगतसिंह
तू अपने भारत में
फिर एक बार जन्म ले
देशभक्ति की भावनाएं
तेरी फकत
मखौल बनाई जाएंगी
दी गई यह
फांसी की सजा भी
राजनीति ही कह जाएगी

तू अपना
निर्मल हृदय निकाल के
रख जाएंगे
इसको भी अपने ही
कमियां निकाल निकाल के

अन्जना गर्ग
कोटा

हमारा भारत देश महान

नवल प्रान्त है, नवल वेश है ,
अरुणिम है मुस्कान।
एक राष्ट्र अनेक भाषाएं,
सप्त सुर इक तान,
हमारा भारत देश महान।।

नवल नवल सड़के है पसरी
नवल नवल उद्यान,
नित नूतन परियोजना करती
लोगों का उत्थान,
हमारा भारत देश महान।।

मोर पपीहे कोयल बुलबुल
गाते जिसकी शान,
भिन्न प्रान्त है भिन्न है बोली
फिर भी दिल इक जान,
हमारा भारत देश महान।

नवल बीज है नवल कल्पना
नवल नवल विज्ञान
नित नूतन परिधान पहन कर
धरती करे विहान
हमारा भारत देश महान।

आँधी लू हो या चोटी पर
माइनस में तापमान
लिए तिरंगा सीमा पर
प्रहरी हैं जिसके जवान
हमारा भारत देश महान।।

किरण मिश्रा "स्वयंसिद्धा"
नोयडा

अब ज़िंदगी क्या हो गई...

उलझ सी गई है अब
ज़िंदगी,
पल दो पल में ये जो
अंतराल आया ।
मुट्ठियाँ भिंच सी गईं
ज़िंदगी है,
वेग लहरों ने भी जो
तीव्र घुमाया ।
चक्रव्यूह सी बन गई
ज़िंदगी है,
विराट विध्वंस ने ऐसा
तरकस चलाया।
विषधार सी बनी अब
ज़िंदगी है,
बहरूपियों ने फिर जो
दफ़न कराया ।
अज्ञात सी अब बनी
ज़िंदगी है,
षड्यंत्र समीर ने ऐसा
जो बिछाया ।
चिंतनशाला सी हुई
ज़िंदगी है,
शून्यता ने जो ऐसा
पाठ पढ़ाया।
आधारहीन सी हुई
ज़िंदगी है,
सृष्टि ने विकराल ऐसा
क़हर बरसाया ।
कब्रिस्तान सी बनी
ज़िंदगी है,
बुझी चिता को देखो
फिर जलाया ।
दहलीज़ लांघ गई
ज़िंदगी है,
परिंदों को फिर से
रेगिस्तान पहुंचाया ।

शालू मिश्रा नोहर

भाई के लिए स्नेह की चाशनी में पगे कुछ भाव

अपनत्व के रिश्ते में मिठास का एहसास रहे
मेरे भाई के लिए मेरी ही राखी सबसे ख़ास रहे

लेन देन स्वार्थ भाव से सदा ही दूर रहे
मेरे भाई तेरे चेहरे पे भरोसे का नूर रहे

मेरे भाई तेरे नसीब में सितारे दमकते रहें
कामयाबी से सिक्के जीवन में खनकते रहें

तुझको जो भी भाए खिलखिलाता तेरे संग रहें
घर हो या बाहर सब और उमंग ही उमंग रहे

आज के दिन केवल एक तसल्ली हम मांग रहे
संग मेरे सभी बहनों के सम्मान की रक्षा होती रहे ।

वीरा से बाँधा मन बंधन
कच्चा धागा पक्का बंधन
मुस्कुराओ तुम दुआ माँगू
मिठास भरा हो रक्षाबंधन

धन दौलत ना चाहिए,भैया तेरी चाह।
याद पुरानी झांक लो, देती बहन सलाह।।

कच्चा धागा प्रेम का , पक्का है विश्वास ।
भाई मेरा खुश रहे , बहना की अरदास ।।

तितली सी चहकी चले , बहना तेरे द्वार !
भइया इसमें ही छिपा , रक्षाबंधन सार !!

केवल एक रक्षा सूत्र नही है .. .स्वच्छ पावन रिश्ते का आधार
जुडी रहे मन से मन की डोर , झंकृत हो जीवन का हर तार
बेचैन हो उठे ,, मन में मिलने की आस ,खिले फूल स्नेहिल से
प्रीत का आबद्ध बंधन, स्नेहिल रिश्ता रहे ना महज़ व्यापार

जन्म जन्मान्तरों तक रिश्ता बाँध दे
बुझती बाती में नेह का तेल डाल दे
भाई के रूप में हो वो पावन देवदूत
बिना स्वार्थ जो जीवन संवार दे

जो स्याह अँधेरे में उम्मीद का दिया जला दे
अपनी भूख भूल बहना को रोटी खिला दे
ना कभी रूठे ना कभी नाराज़ होए जो
तन मन धन छोड़ केवल खुशिया वार दे ।।

ज्योत्सना सक्सेना, उदयपुर

ज्योत्सना सक्सेना को मिला सम्मान

श्रीमती ज्योत्स्ना सक्सेना को भिंडर उदयपुर विद्यालय के भौतिक विकास के लिए उपखण्ड स्तर पर 75 वें स्वतंत्रता दिवस पर सम्मानित किया गया। श्रीमती सक्सेना शिक्षा के क्षेत्र में गरीब बच्चों के लिए भी कार्य करती हैं समय-समय पर उन्हें मानसिक व आर्थिक सम्बल भी प्रदान करती रहीं हैं। सामाजिक सेवा में भी अपना समय देती रही हैं। भिंडर उदयपुर के विद्यालय में इन्होंने प्रेरणादायक कार्य किये हैं। उपखण्ड अधिकारी महोदय द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया।

महानायक...

बापू आप नायक थे, आप महानायक थे
आपको शत-शत प्रणाम मुझ खाकसार का
आप किताबों में दर्ज़ है नगमों में आपका शोर है
दुनिया में आपका जलवा है, दुनिया में आपका ज़ोर है
आपके साथ जो चले, पीछे जो चले वो मासूम अवाम था
उनकी कहाँ पहचान हुई आज तक उनका कहाँ नाम था
जिन्होंने लाठीयां खाई,जिन्होंने गोलियां खाई कौन थे वो
अहिंसा परमोधर्म था आपका, इसलिए मौन थे वो
वो हिन्दू थे या मुसलमान थे, वो दीवाने थे आज़ादी के
राम की धुन थे या अज़ान थे वो दीवाने थे आज़ादी के
वतन पर मर मिटे वो, मर मिटने का उनको नहीं गम था
हरदम उनकी ज़ुबां पर इन्कलाब ज़िंदाबाद था वन्दे मातरम् था
दरअसल आप कमाल के थे बापू, आप कमाल के हो बापू
दुनिया जब तक रहेगी ताक़यामत उतने साल के हो बापू
मैं अदना क्या लिखूं और क्या न लिखूं आप पर बापू
कलम में जब तक दम है, नग़्मे कहूं आप पर बापू

दिलीप तम्बोली, अजमेर

स्वतंत्रता

वर्षों से गुलामी में जकड़ा था जो
भारत आज़ाद हुआ जब आधी रात को,
गूंज उठी ये धरती अंबर जय हिंद के नारों से,

देश पूरा झूम उठा था आज़ादी के उत्साह में
मगर दुखों का पहाड़ टूटा जब देश बंट गया दो हिस्सों में,

कतई आसान न था इस आज़ादी को पाना भी
न जाने कितनी मां के आंचल पड़ गए सूने
न जाने कितनी सुहागिनों ने अपने सुहाग गवाएं,

कांप उठता है आज भी सीना याद करके
वो 57 की क्रांति या फिर वो कारगिल की लड़ाई,

रखकर जान हथेली पर महफूज़ किया हर पल हमको
क़र्ज़ चुकाया उन वीरों ने भारत मां का
करके कुर्बान वतन के नाम खुद को,

आज़ादी की खुली सांस ले हिंदुस्तान हमारा
आज भी यही ख़्वाहिश है
सीमा पर खड़े हर जवानो के दिल में

मिताली पारीक, जयपुर

समाज सेवा

शिल्प सृजन संस्था ने मनाया 75वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। शिल्प सृजन संस्था जो की शिक्षा के क्षेत्र में कई वर्षो से उत्कृष्ट कार्य कर रही है। संस्था का मुख्य उद्देश्य शिक्षा से वंचित बच्चों को शिक्षा से जोड़ना है और राष्ट्रीय पर्वों को इन बच्चों के साथ मनाना। बच्चों में देशभक्ति को जगाना होता है। संस्था का यह कदम बहुत ही सराहनीय है। कच्ची बस्ती के बच्चों द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत बहुत ही शानदार प्रस्तुतियां प्रस्तुत की गई । बच्चों को पधारे हुए अतिथियों द्वारा मिष्ठान इत्यादि वितरित किए गए। शिल्पा अग्रवाल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले बालक बालिकाओं को प्रोत्साहन स्वरूप वाटर बॉटल दी गई।

समारोह के मुख्य अतिथि स्थानीय पार्षद नीरज अग्रवाल,समाजसेवी एवम लेखक रिज़वान एजाज़ी , अमित मोदी जी,व्यवसायी सीता राम सोनी, श्रीमती माया बोथरा, श्रीमती मीनू लूनिया, श्रीमती कन्नू मेहता जी, श्रीमती आंचल पूरी एवम अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

संस्था के सदस्य कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम की व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग प्रदान किया। अंत में श्रीमती शिल्पी शाह ने सभी पधारे हुए अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

साहित्य की सफल यात्रा का नाम है करुणा श्री

साक्षात्कारकर्ता : शालिनी श्रीवास्तव

अंतरराष्ट्रीय लेखिका होने के साथ-साथ करुणा का सागर भी हैं करुणा श्री जो युवावर्ग को हर सम्भव मदद करती रही हैं आर्थिक और शैक्षणिक रूप से भी और साहित्य को समझने में और सही दिशा में ले जाने में...

हिन्दी साहित्य जगत एक महासागर है जिसमें अपनी प्रतिभा का झंडा गाड़ना हर किसी के बूते की बात नहीं । ज्ञान और अनुभूति की धनी करुणा श्री ने भी हिंदी साहित्य जगत को बहुत बहूमूल्य कृतियाँ प्रदान की हैं।

शांत, सौम्य और गम्भीर व्यक्तित्व की धनी करुणा श्री एक अलग दुनिया में जीती हैं। आभास,अहसास और अन्तर्मन से बातें करते हुए राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी हैं। अनेक विधाओं में अपना लोहा मनवा चुकी हैं। लेखिका बाल मन के सुलभ सहज हृदय को भी छूती हैं तो नारी मन को झकझोरती हैं। सामाजिक सरोकारों और इर्द-गिर्द घटी घटनाओं से अपने साहित्य समागम को पूरा करती हैं। इन्होंने अपनी शिक्षा इतिहास में स्नातकोत्तर राजस्थान, विश्वविद्यालय, एम.एड.(शैक्षणिक प्रशासन) उदयपुर विश्वविद्यालय राजस्थान से पूर्ण की व डिप्लोमा संगीत (गायन) लखनऊ भातखण्डे और प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद(उ.प्र.),विशेष टिप्पणी निर्देशन और मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण एस. आई. आर.टी. उदयपुर (राजस्थान) से किया है। आपका पूरा नाम करुणा श्रीवास्तव है और साहित्यिक नाम करुणा श्री है।

वास्तविकता के बेहद निकट रचा साहित्य लिखने में माहिर हैं,कलम की धनी हैं। आईए रूबरू होते हैं करुणा श्री जी की साहित्य यात्रा की कहानी से...

Q. लेखन में रुझान की कोई ख़ास वजह ?

जी हाँ ! घर का माहौल बहुत शैक्षणिक था पिताजी श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव टेली कम्युनिकेशन में निदेशक के पद पर रहे। वे खुद भी उर्दू एवं फारसी में शायरी लिखा करते थे। लिखने व पढ़ने का उन्हें बहुत शौक था। घर में धर्मयुग,पराग, नंदन,चन्दा मामा,डब्बू जी जैसे कई पत्र-पत्रिकाएँ, मैगज़ीन आती थीं। साहित्य को पढ़ने का शौक वहीं से जन्मा। किसी भी परिवार में शिक्षा या संस्कार सिर्फ़ रहने व सीखने से नहीं आते अच्छा माहौल व साहित्य पढ़ने से भी बालमन पर प्रभाव पड़ता है। माताजी श्रीमती शशि श्रीवास्तव ने जीवन जीने के गुर,आत्मशक्ति और स्त्री के स्त्रीत्व से रूबरू करवाया। अतः मेरे लेखन की यात्रा में मेरे परिवार के द्वारा दिये गए माहौल का भी बेहद योगदान रहा है।

Q. आप इतिहास की छात्रा रहीं ऐसे में आपको कब अहसास हुआ कि आप लेखन की दुनिया में भी क़दम बढ़ा सकती हैं?

जी हाँ जैसा कि मैंने बताया घर में लिखने पढ़ने का माहौल था,वहीं से मुझे पढ़ने का शौक जागा और मैं कुछ न कुछ लिखती रहा करती थी। मुझे फ़िल्में देखने का भी बहुत शौक था और मैं फ़िल्म डायरेक्टर बनने के ख्वाब देखा करती थी। जब 9वीं कक्षा में आई साहित्य के दिग्गज़ लेखकों को पढ़ने का भी चाव हुआ और मैंने अज्ञेय,गुलशन नंदा,शिवानी जैसे कई लेखकों के उपन्यास कहानियाँ पढ़ना शुरू किया। जब भी वक़्त होता था पुस्तकें मेरी मित्र बन जाया करती थीं।

मैं जब भी किसी से मिलती या रूबरू होती मैं उसमें अपनी कहानी का पात्र, चरित्र ढूँढने लगती थी (हँसते हुए बताती हैं)

1976 में मैंने अपना पहला उपन्यास लिखा जब मैं 20 वर्ष की थी उसका नाम 'जीवनदान' था जो आज तक भले प्रकाशित नहीं हुआ लेकिन इसके पात्र मैंने चुन लिए थे फ़िल्म अभिनेता नवीन निश्चल और अभिनेत्री नंदा। इस उपन्यास में प्रेम के कई रूप,त्याग,बलिदान जैसे भावों का समावेश था। आगामी प्रकाशन में इसे प्रकाशित करने का विचार है।

इसके बाद जनता का अख़बार नामक एक पत्रिका में मेरी पहली कृति हृदय की पुकार (कहानी) छपी। उसे डॉ किरण नाहटा ने पढ़ा जो परिचित थे पिताजी के, उन्होंने समीक्षक के रूप में मुझे प्रेरित किया कि लिखने का शौक है तो और साहित्य पढ़ो। इसी तरह हमारे पड़ौसी हुआ करते थे डॉ. मोहन सिंह अक्सर उनसे मैं अपने राजनीति व इतिहास विषय पर चर्चा करती थी अपनी जिज्ञासा शान्त करती थी लेकिन उन्होंने हिन्दी लेखन में मेरा रुझान देखकर लिखने के लिए मुझे प्रेरित किया और उस तरह मैंने पत्र-पत्रिकाओं में अपना लेखन देना प्रारंभ किया।

Q. कुछ स्मृतियाँ जीवन को बहुत सूकून देती हैं क्या कोई ऐसी स्मृति ज़ेहन में उभरती है?

जी हाँ यूँ तो मेरा बचपन,युवावस्था और अब तक का सफर बहुत स्मृतियाँ और अनुभव समेटे हुए हैं।सही मायनों में कहूँ तो जीवन का हर दौर हर पड़ाव बहुत रोचक और यादगार है। मेरे जीवन में बहुत अच्छे लोग आए। सभी से मैंने बहुत कुछ सीखा और साझा भी किया। जब मैं पढ़ रही थी तब से पिताजी चाहते थे कि मैं सही शिक्षा पाकर अपने पैरों पर खड़ी होऊँ। मैं 3 बेटों में इकलौती बेटी थी अतः स्नेह के साथ सुरक्षा और सहयोग भी बहुत मिला परिवार से। 23-24 वर्ष की उम्र में मैंने निःशुल्क विद्यालयों में पढ़ाया। गरीब और शिक्षा से वंचित बच्चों को मैं निःशुल्क पढ़ाती थी। मुझे लिखने-पढ़ने,पढ़ाने का जो शौक था वही इस वक़्त काम आया। पढ़ाने में अनुभव लेने के लिए प्राइवेट स्कूल कॉलेज में भी पढ़ाया। एक निजी कॉलेज में पढ़ाने के दौरान एक घटना हुई जो जीवन भर का स्मरण बन गयी। कॉलेज की कुछ दूरी पर एक बस्ती थी जिसमें लोग नाच-गा कर अपना पेट पालते थे।इसे तवायफों की बस्ती के नाम से जाना जाता था। एक बार लंबे समय से फीस न आने पर मैंने उस बस्ती की बच्चियों को नोटिस पकड़ा दिए तब तक मैं अनभिज्ञ थी कि ये बच्चियाँ कहाँ से आती हैं?

दूसरे दिन स्कूल परिसर में एक व्यक्ति आये। व्यक्ति क्या वह एक पूरा व्यक्तित्व थे। लंबा चौड़ा खूबसूरत गबरू जवान पठान आरिफ़ खान । मेरे ऑफिस में जिस अंदाज़ में वे आए मैंने उनसे पूछा, कहिये क्या काम है? उन्होंने ज़िक्र किया उन नोटिसों का कि 'क्या आप जानती हैं कि वो बच्चियाँ कहाँ से आती हैं ?' फिर उन्होंने मुझे सब बताया लेकिन मेरे ऊपर यह सब सुनकर भी कोई खौफ़ या भय नहीं आया मुझे सामान्य देख वह फिर बोले मैं उस बस्ती का हेड हूँ और आप इस फीस की फ़िक्र न करें आ जाएगी जल्द लेकिन अभी बच्चियों को पढ़ने के लिए आने दें। हालांकि आपसी समझौते और बातचीत से इस समस्या का हल निकल गया लेकिन उनका व्यक्तित्व और सोच मुझे प्रभावित कर गई। यूँ वह जिस काम से जुड़े थे वह सामाजिक दृष्टि से अच्छा काम न था साफ शब्दों में कहा जाए तो बस्ती का गुंडा था वह। जो अक्सर इन बस्तियों के हेड होते ही हैं लेकिन उनके बात करने का ढंग, अपनी बात रखने का अंदाज़ जुदा था अतः उस श्रेणी का होते हुए भी वह एक सुलझा हुआ,साफ,सभ्य इंसान थे। अतः उनसे बहुत लंबे समय तक मित्रवत व्यवहार रहा। जीवन में कई लोग आये जिनके साथ ने जीवन को दिशा देने में बहुत योगदान दिया। 1985 में मैं सरकारी सेवा में आ गई थी लेकिन इस व्यक्ति से व्यवहार बना रहा। वो मुझे मेरी सादगी,दबंगता और स्पष्टवादिता व लेखन की वजह से बहुत मान सम्मान देते थे और परवाह करते थे। चूंकि वह एक विवाहित व्यक्ति थे अतः हमारा सम्बन्ध मित्रवत ही रहा लेकिन मेरे लेखन की यात्रा में उनकी बताईं बातें, अनुभव,घटनाएँ यहाँ तक कि उस बस्ती के बारे में उन लोगों के बारे में,उनके रहन-सहन रीति-रिवाज़,उन खानदानों के सिद्धान्त सबका कहीं न कहीं ज़िक्र मिलता है। यह व्यक्तित्व अब इस दुनिया में नहीं है लेकिन जीवन के सफर में सुखद याद में रूप में हमेशा साथ है।

Q. आज के युवा साहित्यकारों को कोई संदेश देना चाहेंगी?

आजकल का साहित्य मुक्त है,खुद में अनूठा है। साहित्य को किसी विधा या सीमा में बाँध देना ठीक नहीं।मन जो सोचे,समझे लेकिन कह नहीं पाए उसे लिख देना, कागज़ पर उकेर देना ही साहित्य है और मन की बात लिखने या कहने का सबको अधिकार है।

हाँ! शैक्षणिक दृष्टि से शुद्ध साहित्य,अगर युवावर्ग अपने लेखन में चाहता है तो उसे पढ़ने की आदत को बढ़ाना होगा सामान्य ज्ञान के साथ-साथ भाषा की भव्यता को समझना होगा। यूँ तो मन की बात किसी भी लहज़े में, भाषा में कहना या लिखना सम्भव है लेकिन प्रभावशाली ढंग से कहने के लिए भाषा व भावाभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः हर तरह का साहित्य पढ़ें,सुनें,देखें और उस पर चिंतन भी करें और सीखें भी।

Q. राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आपका साहित्य पढा जा रहा है, अन्य भाषा में अनुवादित हो रहा है,उन पर शोध भी हो रहे हैं ऐसे में कैसा महसूस करती हैं ?

ज़ाहिर है मन को सूकून मिलता है कि मैं देश के साहित्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाने में सफल हुई। हर लेखक की एक मौलिक ज़िम्मेदारी है कि आने वाली पीढ़ी को साहित्य से जुड़ा रखने में अपना योगदान दे क्योंकि जिस तरह हम नरेंद्र कोहली,महादेवी वर्मा, अज्ञेय, गुलशननन्दा जैसे कई अंसख्य महान लेखकों को पढ़कर बड़े हुए हैं उसी तरह बच्चों के भविष्य निर्माण में हमारा भी सहयोग दर्ज़ हो। साहित्यिक गरिमा बनी रहे और सही दिशा में ले जाये बस यही एक लेखक का कर्तव्य होता है। इस दृष्टि से साहित्य के इस सफर में मैं अपने साहित्यिक जीवन की यात्रा को सहज,सफल और सूकून में पाती हूँ।

साहित्यिक सफर एक नज़र में...

1. जीवन दान (अप्रकाशित नगर प्रथम उपन्यास)
2. पहली किताब फिर वही घरौंदा 1995 (कहानी संग्रह)
3. टुकड़ा टुकड़ा नारी (हिंदी व मराठी भाषा में)
4. जाफ़रानी हवा (कहानी संग्रह 2002)
5. अन्तर्मन की कथाएँ (बोधकथायें 2005)
6. तलाश रिश्तों की (उपन्यास 2008)
7. आस्था के फूल (लघुकथाएँ 2010)
8. मोक्ष द्वार(हिंदी व अंग्रेज़ी में भी भाषा में)
9. ईश्वर का उपहार। (लघुकथाएँ 2015)
10. धरती पुत्र (कहानी संग्रह 2016)
11. मंज़िलें और भी हैं बाक़ी (बाल उपन्यास 2017)
12. आस्था का द्वार (उपन्यास 2017)
13. और मशाल जलती रही (कहानी संग्रह 2018)
14. संस्कारित बाल कहानियाँ (बाल कहानी 2020)
15. अलविदा (उपन्यास 2021)
16. अनुभूतियों का स्वर (काव्य संग्रह)
17. फिर वही घरौंदे (कहानी संग्रह)
18. बुराई का बदला भलाई से दो (बाल साहित्य व बाल उपन्यास)
19. सेठ से सेवक बना
20. आत्मदान
21. पुनर्जन्म का साथी
22. नन्हे कदमों का सफर (हिंदी व अंग्रेज़ी भाषा में)
23. अपने दीपक स्वयं बनो
24. मंज़िल और भी बाक़ी

सामाजिक क्षेत्र में सम्मान

1. समाज के पिछड़े वर्ग एवं निर्धन बच्चों की शिक्षा उन्हें आर्थिक क्षेत्र में सहयोग प्रदान करने के क्रम में समरसता मंच द्वारा समरसता सम्मान।
2. पल्स पोलियो में सक्रिय भागीदारी निभाने एवं समर्पण के साथ कार्य करने के लिए दो बार स्वर्ण पदक शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा राज्य स्तर प्रशस्ति पत्र सहित।
3. अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में श्रेष्ठ पुरस्कार स्पंदन साहित्य संस्थान जयपुर द्वारा प्रदत्त।

उपलब्धियाँ

1. कई पुस्तकें अमेरिका, लन्दन एवं कनाडा की लाइब्रेरी हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी अनुवाद भी उपलब्ध।
2. कई साक्षात्कार स्थानीय राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं से प्रकाशित हो चुके हैं शैक्षिक पत्रिका शिविर राजस्थान से प्रकाशित हो चुका है आकाशवाणी और दूरदर्शन में भी आपके कई कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं

शोध कार्य के लिए चयनित पुस्तकें

जाफ़रानी हवा (कहानी संग्रह) एवं मोक्षद्वार (उपन्यास) इन दो कृतियों पर लघु शोध कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा डॉ ब्रह्मानन्द के निर्देशन में करवाया गया है।

पुरस्कृत कृति व सम्मान

1. आस्था के फूल (लघुकथा संग्रह) शम्भू शेखर सक्सेना पुरस्कार सामाजिक साहित्यिक विकास संस्थान बीकानेर राजस्थान से 2020 में।
2. सम्मान रत्न की उपाधि राजस्थान जन मंच द्वारा
3. जिला शिक्षा क्षेत्र में साहित्यिक सम्मान पुरस्कार
4. कायस्थ समाज चित्रगुप्त समिति जयपुर साहित्य श्री की उपाधि चित्रगुप्त जयंती के शुभ अवसर पर 2013 में
5. शिक्षा क्षेत्र में सम्मान शिक्षक भूषण से अलंकृत राष्ट्रीय समता मंच द्वारा शिक्षक दिवस पर
6. भगवानदास यादव सम्मान श्री कला साहित्य अकेडमी इंदौर मध्य प्रदेश 2001
7. कवि रत्न सम्मान (वतन के राही) महिमा प्रकाश नगर छत्तीसगढ़ शिक्षक साहित्यकार मंच दुर्ग मध्य प्रदेश 2005
8. हिमालय व हिंदुस्तान ग्रुप द्वारा साहित्य सेवा में 25 वर्ष पूरे होने पर लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड दिसंबर 2019 देहरादून में बाल भूषण सम्मान देवपुरा स्मृति नाथद्वारा उदयपुर।
9. श्री कृष्ण मुरारी गोयल स्मृति सम्मान-राष्ट्रीय पत्रिका जगमग दीपज्योति अलवर के रजत जयंती समारोह 2009 में
10. राष्ट्रीय गौरव की मानद उपाधि से अलंकृत-अखिल भारतीय हिंदी सेवा संस्थान इलाहाबाद उत्तर प्रदेश मई 2009
11. सुमन मेहरोत्रा सम्मान राजस्थान लेखिका साहित्य संस्थान जयपुर 2010
12. फातिमा स्मृति सम्मान (राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान) शबनम साहित्य परिषद द्वारा जोधपुर 2010-12 में
13. समाज रत्न श्री आनंद अग्रवाल सम्मान जगमग दीपज्योति राष्ट्रीय पत्रिका अलवर राजस्थान 2016 में
14. संजीवनी स्वर्ण पदक सम्मान अंतरराष्ट्रीय समता मंच जयपुर
15. श्री गोविंद साहित्य सेवा समिति द्वारा अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह 2017 में हिंदी भाषा भूषण सर्वोच्च सम्मान समग्र साहित्य के लिए मुरादाबाद में सम्मान

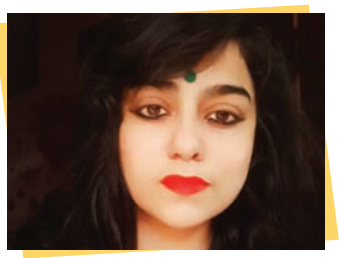

भारती गौड़, सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक

अंतिम सहमति स्वयं से रखना... अंतिम प्रशंसा स्वयं की करना...

स्वयं को तभी खोना जब पाने के लिए स्वयं से बेहतर कुछ मिले। पिछले एक सप्ताह से मैं जिस परामर्शी की काउंसलिंग कर रही हूँ अवसाद की, उसने मुझसे एक सवाल किया आपने मनोवैज्ञानिक बनना ही क्यों चुना!

मेरे रिश्तेदारों ने भी मेरी मां का सिर खा लिया यह पूछ पूछ कर कि आपकी बेटी यह पागलों का विषय क्यों चुन रही है और इसमें आगे स्कोप क्या है! आख़िर करना क्या चाहती है? क्योंकि उससे पहले मेरे पास मेरा विषय संगीत (इंस्ट्रूमेंटल-सितार) था और असल में यह संगीत विषय ही आधार है मेरा मनोवैज्ञानिक बनने का।

जब मैं ग्यारहवीं कक्षा में थी तब उस एक मनहूस दिन 25 नवंबर, सुबह 8-00 बजे परीक्षा देने ऑटो से स्कूल जा रही थी। ऑटो पलट गया उसमें 12 लड़कियाँ थी हम एक ही स्कूल की और उसके अलावा आगे 3 लोग और बैठे हुए थे। उनमें से सिर्फ मुझे चोट लगी और सर्दी इतनी भयंकर थी। सब लड़कियाँ ठीक तरह से उठीं मैं भी वैसे ही उठ कर खड़ी हो गई लेकिन थोड़ी देर में देखा नीचे तो खून की एक नदी से बह रही थी वहाँ पर और मुझे भी यही लगा कि किसी को बहुत ज़्यादा लग गई दिखती है। तभी एक लड़का दौड़कर आया और उसने मेरे उल्टे हाथ पर रुमाल रखा और मैंने देखा कि मेरा हाथ कलाई से टूटकर आधा लगभग टूट गया था और उसमें वह सब दिख रहा था जैसे कोई रंगीन चित्र दिखता है जिसमें लाल रंग का अतिरेक देख मैं उसे देखती रही। मेरी कलाई में एक गड्ढा बन गया था और मैं उसे देख रही थी। इसके बावजूद भी दर्द नहीं हो रहा था क्योंकि इतनी भयंकर थी सर्दी कि कुछ महसूस ही नहीं हो रहा था। उसी लड़के ने मुझे अस्पताल पहुँचाया और वहाँ मेरा ट्रीटमेंट हुआ। मेरी सारी नसें कट फट चुकी थीं। फैक्चर हो चुका था। हाथ पूरी तरह से कलाई से डैमेज हो चुका था कुल मिलाकर मुझे लग गया था कि मेरा हाथ बचेगा नहीं। जिस तरह का वो हो चुका है इसे काटना ही पड़ेगा। एक महीने तक ट्रीटमेंट चला बजरंगबली की कृपा से हाथ बच गया लेकिन वह ठीक कभी नहीं हुआ और उसके बाद उसमें उस वक्त सत्तर टांके आए थे। बाद में उसके तीन बड़े ऑपरेशन हुए। दो बार प्लास्टिक सर्जरी हुई। पता नहीं क्या-क्या हुआ लेकिन वह पहले वाले रूप में ना आ पाया ना पहले जैसी ताकत आ पाई।

मैं ग्यारहवीं कक्षा में थी और मेरा शैक्षिक रिकॉर्ड ऐसा ही था कि मैंने तब तक हर बार टॉप ही किया था तो मुझे यह भी अवसाद हो गया था कि अब मैं क्या करूँगी। दूसरा मुझे डॉक्टर ने कह दिया था कि तुम्हारा विषय है संगीत, सितार तो तुम भूल जाओ। अब तुम कभी सितार बजाना तो दूर की बात है उसको अपनी कलाई पर ले भी नहीं सकती क्योंकि तुम्हें तुम्हारी कलाई अब एक पानी का हल्का जग तक उठाने के काबिल भी नहीं रही। डॉक्टर के ये शब्द थे।यूँ तो मैं पहले ही अवसाद में जा चुकी थी क्योंकि यह बहुत बड़ा हादसा था तो यह स्वाभाविक है कि मैं कैसे नहीं डाउन होती। डॉक्टर ने कह ही दिया था कि सितार बजाना दूर की बात है उसे उठा भी नहीं पाओगी। कलाई पर ऐसा करने की हिमाकत करना भी मत क्योंकि उसके बाद बहुत बुरा हो सकता है हाथ के साथ।

मेरे सामने अब चुनौती यह थी कि मैं विषय छोड़ना नहीं चाहती थी जबकि मेरे अच्छे व्यवहार की वजह से और शैक्षिक रिकॉर्ड और व्यवहार की वजह से सारे ही शिक्षक मुझसे बहुत प्रसन्न रहते थे और उन्होंने मुझे बहुत सपोर्ट भी किया खासकर मेरी संगीत वाली मैम ने।

मैम ने कहा भी कि हम नहीं चाहते हाथ के साथ और बहुत कुछ बुरा हो तो विषय बदल दो यही ठीक रहेगा लेकिन मुझे ये था कि डॉक्टर ने यह कैसे कह दिया कि मैं यह नहीं कर सकती हूँ। मुझे वह करना था। अब यह हुआ कि हमारे लंच के बाद म्यूजिक का पीरियड आता था।शुरू में मुझे लगा कि लंच खाने में मेरा वक्त बर्बाद होता है तो इस वक्त को बचाकर में वह प्रैक्टिस कर सकती हूँ जो प्रैक्टिस बाकी लोग नहीं कर पाएँगे तो मैंने लंच ले जाना बंद कर दिया।एक्सीडेंट के तीन महीने बाद जब मैं म्यूज़िक रूम में गई तब मैंने देखा वहाँ मेरी जो जगह थी और मेरा जो सितार रखा रहता था, उसकी जगह कोई और सितार था और मुझसे कहा गया कि अब मैं अगर बजाना चाहती हूँ तो सबसे हल्का वाला सितार उठा लूँ?। जबकि मैं सबसे बड़ा और भारी वाला सितार ही उठाती थी।मैंने मैम से? निवेदन किया कि मैं वही सितार उठाना चाहती हूँ। आप यह मुझे करने दीजिए। मैम बहुत अच्छी थी और उन्होंने इस बात को मान लिया। उन्होंने कहा ठीक है।

मैंने बहुत प्रैक्टिस की खूब प्रैक्टिस की। हालाँकि हाथ में खरोच आ जाती थी। लग जाती थी। दर्द भी होता था। कभी-कभी ब्लड भी आ जाता था। फिर कभी कपड़ा बांधकर जैसे तैसे मैनेज करके मैंने वह किया।

मैंने संगीत में में भी टॉप किया। जब रिजल्ट आया और अखबार में भी मेरी तस्वीर आई तब मैं उन्हीं डॉक्टर साहब के पास गई और मैंने उनको पेपर दिखाया। उन्होंने कहा, वाह ये तो बहुत अच्छी बात है।

मैंने कहा कि नहीं, अच्छी बात यह नहीं है कि मेरी तस्वीर आई है। अच्छी बात यह है कि आपने जो मुझसे कहा था कि मैं ज़िंदगी भर नहीं कर पाऊँगी वह मैंने डेढ़ साल में करके दिखा दिया। आपकी बात बुरी नहीं लगी थी लेकिन मुझे तोड़ देने के लिए काफी थी। आपने मेरा बहुत अच्छा इलाज किया लेकिन एक नसीहत में आपको देना चाहती हूँ कि आज के बाद ज़िंदगी में कभी अपने किसी भी मरीज से ये मत कहिएगा कि तुम अब यह कभी नहीं कर पाओगे क्योंकि बहुत से मरीज़ ये बात मान लेते हैं कि वह नहीं कर पाएँगे और वो वास्तव में नहीं कर पाते। मनोविज्ञान मैंने इसलिए चुना।

इसलिए आज के बाद कोई आपसे ये कहे कि तुम ये नहीं कर सकते तब उसी वक्त ये उनसे कहिए कि मैं ही हूँ जो यह कर सकती हूँ/ सकता हूँ और करके दिखाइए। उसे नहीं, अपने आप को। इस दुनिया में अगर आप स्वयं पर यकीं रखते हैं तब तो ये दुनिया आपकी है वरना जब आप स्वयं के ना हुए तो ये आपकी खाक होगी क्या?

स्वयं पर ज़ाया किया गया वक्त इंवेस्टमेंट है, दूसरों पर इंवेस्ट किया गया वक्त ज़ाया है।

आया सावन...

फिर आया सावन
लाल- पीले फूलों की पंखुड़ियों में,
भ्रमर की गुंजार में,
ललना के रक्ताभ अधरों में,
सुनहरे कपोलों में,
कजली आंखों में,
फिर आया सावन।
महावर लगे पैरों में,
मेहन्दी की खुशबु में,
तीज के घेवरों में,
बहन की राखी में,
आज़ादी की अंगड़ाई में,
फिर आया सावन,
लाल- पीले फूलों की पंखुड़ियों में।

डॉ. शीतल प्रसाद मल्हेन्द्रा, दौसा

'मेरा तोहफ़ा-'स्त्री-मान'

सावन का महिना है.
सावन का यह महिना तरबतर है.
और लहरिया पहने हर महिला
रिम-झिम फुहार सी चंचल हो चली है.
सबका एक ही नाम हुआ जाता है -
'बहन'! दौड़ लगी है बाज़ार में ज़ाम-ज़ाम।
दुकानें भी सज-धज गयी है चमाचम खुशदिल माहौल है!
आने वाली पूनम को राखी जो है भई! मैं भी आँखें मूँद कर उस
पावन दिन की रौनक में खो जाना चाहती हूँ...
बागों में, बाज़ारों में, घरों में गलियों सडकों पर, सिनेमा हॉल में
जहाँ देखो वहां कोई मरदाना कलाई सूनी नहीं है आज.
सभी किसी न किसी के गर्विले भाई हैं. सबके पेशानी पर बहन के
हाथ का सजा तिलक लहक रहा है.
चेहरे का तेज़ बता रहा है कि वे
अपनी बहन के मान-सम्मान के ताउम्र रक्षक हैं.
तभी ख्याल कौंध जाता है, पिछले वर्ष में अखबार में छपी इतनी
ख़बरों में अपने देश की स्त्रियों पर होते
अत्याचार करने वाले कौन मर्द थे ?
कि किसी गैर स्त्री को देख कर इन्हीं मर्दों के अंदर का वो तेज़, वो
गर्व, वो रक्षक वो भाई क्या मर जाता है ?
या डरावना हो जाता है या डरपोक हो जाता है ?
एक बहन (मगर एक स्त्री पहले)

कविता 'मुखर'
जयपुर

शॉर्टकट सफलता दे सकता है, सुकून नहीं

ज्ञानवती सक्सेना

स्वयं सिद्धा साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्था की संस्थापक

हर सफल व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा वक्त आता है जब उसके सामने जीवन बहुत बड़ा पहाड़ बन खड़ा हो जाता है लेकिन उस पहाड़ को तोड़ कर राह बनाने वाला ही माझी कहलाता है। संघर्ष की आग में तपकर कुंदन बनने वाले ऐसे लोग समाज में एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसी श्रृंखला में आज हम बात करने जा रहे हैं संघर्ष के बीच सामाजिक और पारिवारिक जीवन का तानाबाना बुनती शख़्सियत से जिन्होंने अपने जीवन में आने वाले संघर्षों को ही अपनी सफलता की सीढ़ी बना लिया। बचपन में ही पिता का साया खो देने के बावजूद माँ की दृढ़ता और संघर्ष को अपने जीवन की पहली शिक्षा बना लिया और शुरू किया सफर जीवन का । हिंदी व्याख्याता पद से आप सेवा निवृत हुई हैं। सरकारी सेवा के दौरान भी और उसके बाद भी डिजिटल और प्रिंट मीडिया में आपका पूरा वर्चस्व है। कई संस्थाओं, वर्चुअल ग्रुप्स और प्रकाशनों से आप जुड़ी हैं और देश की अधिकतर साहित्यिक गतिविधियों में भी आप शिरक़त करती रहीं हैं। आइए रूबरू होते हैं श्रीमती ज्ञानवती सक्सेना जी से जो कवयित्री, लेखिका होने के साथ-साथ कुशल मंच संचालक भी हैं और मोटिवेशनल स्पीकर के रूप में भी आगे बढ़ रही हैं।

Q. आइये आपको आपके बचपन में ले चलते हैं ज़रा अपने बचपन पर प्रकाश डालें?

कल का साध्य,आज आराध्य हो गया
कल का त्याज्य,आज श्लाघ्य हो गया
ओहदा ही उत्कृष्टता का साक्ष्य हो गया
कल तक का दुर्भाग्य,आज सौभाग्य हो गया

सबसे पहले तो मैं शुक्रिया अदा करती हूँ हिलव्यू समाचार का जिसने एक बार फिर से मुझे अपनी ही जीवन यात्रा को स्मरण में लाने का मौका दिया। माता पिता के ज़िक्र के बिना जीवन की सार्थकता पूर्ण नहीं होती।पिता त्रिभुवनलाल सक्सेना और माता सुशीला सक्सेना की मैं तीसरी संतान थी। बड़ी बहन चन्द्रावती उसके बाद भाई जगमोहन फिर मैं स्वयं और सबसे छोटी बहन शोभा थी।

आदर्श माता पिता का साया था बचपन बहुत अच्छे से बीत रहा था कि अचानक पिता जी का देहांत हो गया। पूरी ज़िम्मेदारी माता जी पर आ गयी। चार बच्चों की ज़िम्मेदारी जिस बखूबी से पूरी गणित बैठाकर बजट बनाकर माँ ने निभाई तो यह कहना मुश्किल नहीं कि वाकई बच्चों के भविष्य निर्माण में माँ का बड़ा योगदान होता है। अंगुली पकड़कर चलना सिखाने से लेकर जीवन जीने के गुर सिखाने तक।

माँ को यह मैनेजमेंट करते देख वही गुण हम भाई बहनों में भी आये क्योंकि माँ संस्कार के साथ साथ परिवार में अपने कुशल नेतृत्व से पारिवारिक,सामाजिक,आर्थिक दृढ़ता को बनाये रखने का पाठ भी हमें पढ़ाती रहीं।

Q. पिता जी गुज़र जाने के बाद जीवन को पटरी पर लाना कैसे आसान हुआ?

उत्तर :- जैसा कि मैंने बताया माँ की छत्रछाया से जीवन आगे बढ़ने लगा। परिस्थितियों को देखते हुए माँ ने हम सभी को हाथ के हुनर की भी शिक्षा दिलाई। पढाई के साथ साथ हमने सिलाई, कढाई, बुनाई जैसे कई काम सीखे और उस दौरान इस तरह ये हमारे आय का ज़रिया भी बने।

Q. लेखन की तरफ़ रुझान कब से शुरू हुआ?

जो काँटों को भी हँस सह जाता
वो संघर्षों से हर्षों तक जाता
उत्ताल हिलोरों से जो टकराता
वो ही मोती खोज कर लाता

लिखना केवल एक कला नहीं मन की भाषा का प्रतिरूप है। मन जब बातें करना चाहता है खुद से तो कलम के क़दम अपने आप कागज़ पर उभर आते हैं।

मैं 10वीं में पढ़ रही थी। हमारी रिश्ते में एक दीदी की बेटी थी आभा सक्सेना जो मेरी हमउम्र ही थीं वे बहुत प्रतिभाशाली थी शिक्षा,संगीत,कला का समिश्रण थी बस वही प्रेरणा का स्रोत बनी कि उसी की तरह ही अपने आपको बनाना है। काव्य लेखन में भाई जगमोहन मेरी प्रेरणा रहे वे कविताएँ लिखा करते थे उनकी डायरी मैं भी पढ़ा करती थी इन्हीं का प्रभाव था कि मैं लिखने लगी और कब मैंने काव्य और लेखन की दुनिया में क़दम आगे बढ़ा दिया पता ही नहीं चला।

Q. आगे की शिक्षा का सफर कैसे तय हुआ? क्या आपकी निरन्तर शिक्षा लेने में या सरकारी सेवा में होने के कारण विवाह होने में कुछ बाधा आयी?

उत्तर :- हाँ यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जो मुझे लगता है कि उस दौर का सबसे बड़ा विषय भी था एक लड़की के लिए कि वह दो परिवारों के बीच एवं पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के साथ कैसे अपनी आगे की शिक्षा या नौकरी में तालमेल बिठा पाती है? इंटरमीडिएट के बाद मैं सरकारी सेवा में आ गयी थी। इसी सरकारी सेवा के साथ-साथ मैंने बी.ए.,संस्कृत में एम.ए. और बी.एड. भी किया। फिर एल.एल.बी. करने का मन हुआ चूंकि उसकी कक्षाएं शाम को हुआ करती थीं तो एल.एल.बी. फर्स्ट ईयर में मैंने प्रवेश ले लिया किंतु उस दौरान रिश्ते आना शुरू हो गए थे और सामाजिक जिम्मदारियों का निर्वाह करते हुए माँ ने विवाह कर दिया। पति सुभाष सक्सेना अपने नाम स्वरूप ही सुलझे हुए मिले जो उस दौरान बैंक में कैशियर थे और अब मैनेजर पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। विवाह के दौरान यह बात आई कि क्या मैं शादी के बाद नौकरी करूँगी ? मैं ख़ामोश रही और मेरी इस ख़ामोशी को मेरे ससुर जी ने पढ़ लिया और अच्छी बात यह थी कि वे महिला सशक्तिकरण के पक्षधर और खुली विचारधारा के धनी थे और उन्हीं के सहयोग और आशीर्वाद से मैंने विवाह के बाद भी अपनी नौकरी ही नहीं और अधिक शिक्षा भी प्राप्त की। विवाह के बाद मैंने अपनी पारिवारिक ज़िम्मेदारी और सरकारी सेवा दोनों के बीच तालमेल बिठाया। मेरा ससुराल एक आदर्श ससुराल कहा जाना उचित होगा कि मुझे परिवार के सभी लोगों से इस दौरान बहुत सहयोग मिला। इस जीवन सफर में मेरे तीन बेटियाँ हुई। इनकी परवरिश के साथ-साथ मेरी शिक्षा भी बढ़ती रही मैंने इसके बाद एम.एड., एम.फिल. किया और लेखन की दुनिया में भी बढ़ती रही। अब मेरी तीनों बेटियाँ विवाहित हैं। सबसे बड़ी बेटी प्रियंका टोरेंटो में रॉयल बैंक ऑफ केनेडा में है दूसरी बेटी परिधि स्टील ऑथोरिटी ऑफ इंडिया में है तीसरी बेटी वाग्मिता आई.बी.एम. में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है।

Q. अपनी रचनाओं को पुस्तक का रूप कब दिया आपने?

मैं लिखती रहती थी एक बार 1996 में जयपुर शहर के प्रतिष्ठित अख़बार में एक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें पूरे राजस्थान में मुझे द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ सम्मान पत्र, राशि के अलावा उस अख़बार द्वारा प्रथम,द्वितीय व तृतीय प्रतियोगी को चार्टर प्लेन से जयपुर शहर दर्शन भी करवाये गए थे इससे मेरे हौसलों को बल मिला। इसके बाद बच्चों के भविष्य की बागडोर संभालना ज़रूरी लगा तो अंतराल आ गया साहित्यिक यात्रा में। फिर मैं उनकी शैक्षणिक और वैवाहिक जिम्मेदारियों से मुक्त होते ही पुनः अपनी यात्रा पर चल निकली और मेरी पहली पुस्तक जयपुर शहर के एक प्रकाशन से प्रकाशित हुई उस पुस्तक का नाम 'हिलोरें' है जिसमें मैंने सामाजिक सरोकार से युक्त अपना काव्य प्रस्तुत किया है। इस तरह मेरी पुस्तक यात्रा चल निकली।

Q. साहित्यिक सफर के कुछ यादगार लम्हे?

जी हाँ यूँ तो हर रचना का लेखन,पुस्तक का प्रकाशन या सम्मान हर लेखक के लिए अमूल्य क्षण ही है किंतु एक क्षण है जो विशेष रूप से मेरे लिए बहुत गौरवशाली है जब मुझे 'भारत के इक्कीस परमवीर चक्र'- भारत का सर्वोच्च सैनिक सम्मान (साझा काव्य संग्रह) में मेज़र शैतान सिंह पर काव्य लेखन पर डॉ श्री वी.के.सिंह (सेवानिवृत्त चीफ आर्मी) द्वारा काव्यकुल सृजन वीर सम्मान अवार्ड मिला वर्तमान में वे केंद्रीय राज्य मंत्री हैं। इसी तरह हिंदी भाषा डॉट कॉम द्वारा आयोजित वर्चुअल राष्ट्रीय प्रतियोगिता में सौहार्द विषय पर मुझे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। दिल्ली से प्रकाशित एक पत्रिका द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में मैंने देश में सातवाँ स्थान प्राप्त किया। यूँ कई अवसर ऐसे हैं जो मेरे लिए अमूल्य हैं मेरी साहित्यिक यात्रा के कॉलम में उनका ज़िक्र मिलेगा आपको। इसी तरह कलमकार मंच से एक साथ 27 पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिसमें देश के जाने माने लेखक और कवियों की पुस्तकें भी शामिल थी उनके साथ मेरी भी पुस्तक 'प्रवाह' को स्थान मिला और वह प्रकाशित हुई। सामाजिक मूल्यों पर आधारित यह मेरी द्वितीय पुस्तक थी।

साक्षात्कारकर्ता : शालिनी श्रीवास्तव

अब तक प्राप्त सम्मान व उपलब्धियाँ

1. हिंदी साहित्य रत्न सम्मान
2. हिंदी भाषा डॉट कॉम पर आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान
3. दिल्ली से प्रकाशित सारा सच राष्ट्रीय प्रतियोगिता में सातवाँ स्थान
4. अहमदाबाद से कर्मभूमि समाचार पत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान
5. यूट्यूब पर टीपीएस चैनल और जयपुर काव्य साधक सहित कई मंचों पर काव्य पाठ।
6. दूरदर्शन एवम आकाशवाणी में कई प्रस्तुतियाँ दीं
7. बुलन्दी संस्था द्वारा विश्व का सबसे बड़ा कवि सम्मेलन हुआ जो 207 घण्टे वर्चुअल हुआ और विश्व रिकॉर्ड बना उसमें प्रस्तुति ।
8. जैसलमेर दूरदर्शन द्वारा श्रोताओं की पहली पसंद से सम्मानित
9. देश की विभिन्न पत्र- पत्रिकाओं जैसे साहित्य समर्था, साहित्य समीर, साहित्य दस्तक, जगमग दीप ज्योति, हिंदी भाषा डॉट कॉम, अभ्युदय, हिलव्यू समाचार में आपके लेख व काव्य छपते रहते हैं।
10. अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य मंच दिल्ली, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राष्ट्रीय शिक्षक संगोष्ठी, वरिष्ठ नागरिक मंच, महिला काव्य मंच,कलमपिया संस्थान, सम्पर्क संस्थान, साहित्य प्रांगण संस्था, जयकृति साहित्य फाउंडेशन कई स्थानीय व राष्ट्रीयमंचों पर काव्य पाठ व मंच संचालन । लगभग 25-30 मंचों पर एक-एक घण्टे के काव्य पाठ भी बड़ी उपलब्धि रहे हैं।

ज्ञानवती जी की साहित्यिक यात्रा एक नज़र में...

काव्य संग्रह

1. हिलोरें
2. प्रवाह

साझा काव्य संग्रह

1. शब्द मुखर है
2. शब्दों का कारवां
3. साहित्य कुंदन
4. काव्य कुंज
5. क़लम प्रिया
6. साँसों की सरगम
7. मुक्ताकाश
8. आस्था के आयामः राम
9. कोरोना काव्यायन
10. बासंती बयार
11. अभ्युदय
12. भारत के इक्कीस परमवीर चक्र विजेता पर काव्य (भारत का सर्वोच्च सैनिक सम्मान)

काव्यकुल संस्थान द्वारा भारत के इक्कीस परमवीर चक्र विजेता(साझा काव्य संग्रह) में मेज़र शैतान सिंह पर लिखे गए काव्य पर सम्मान पत्र व पदक।

साझा लघुकथा संग्रह

1. शब्दों का कारवाँ
2. लघु की विराटता

अन्य साहित्य

1. माँ की पाती बेटी के नाम (साझा पत्र संग्रह)

तिरंगा

राष्ट्र-गौरव का प्रतीक तिरंगा
राष्ट्रीयता का प्रतीक तिरंगा
फहर फहर फहराता है
हमें वीर शहीदों की कुर्बानी
पल पल याद दिलाता है

नमन भगत सिंह अशफाक को
नमन राजगुरु सुखदेव को
जो गुलामी की जंजीरों से
भारत माँ को आजादी दिला गए
सरहद की रक्षा हित जिए मरे
ओढ़ तिरंगा,अपनी जां लुटा गए

विश्वशांति का है अग्रदूत ये
अध्यात्म का है चित्रकूट
संस्कृति का है देवदूत ये
संप्रभुता का है राजदूत ये

सुख समृद्धि परिचायक ये
किसानों का उन्नायक ये
प्रगति का अधिनायक ये मान
प्रतिष्ठाका गायक ये

गर्जन सर्जन दर्शन ये
सत्य सनातन अर्जन ये
अशोकचक्र शांतिवर्षक ये
सदा न्यायपथ पथ प्रदर्शक ये

राष्ट्रगौरव का प्रतीक
तिरंगा
फहर फहर फहराता है
हमें वीर शहीदों की कुर्बानी
पल पल याद दिलाता है

ज्ञानवती सक्सेना

तमाम शहरों को बांटे तूने अंधेरे इस हवा में तेरा चिराग़ कैसे बचता...

शादाब ख़ान, राजनीतिक समीक्षक

विश्व के सबसे अशांत क्षेत्रों में से एक अफग़ानिस्तान ने एक बार फिर दुनिया को अपनी डरावनी अशांति से अवगत कराया है। यहां तालिबान ने दिखा दिया है कि क्यों इंसानी की जान इस धरती पे सबसे सस्ती है।

तालिबान,जिसके तिलिस्म को दुनिया की इकलौती महाशक्ति अमेरिका भी भेद नहीं पाया,एक रहस्य से कम नहीं है।इस धरती को मिला यह अभिशाप है या वरदान,पर यह सच है कि इस क्षेत्र को कोई भी बहुत लंबे समय तक विजित नहीं कर सका।वस्तुतः कबीलाई आक्रांताओं वाली इस भूमि पर कब्जा करना तो छोड़िए,इस पर नियंत्रण स्थापित करना भी बाकी दुनिया के लिए दूर की कौड़ी साबित हुई है।मुग़लों से लेकर अंग्रेजों तक,सभी ने अफग़ानिस्तान पे प्रभुत्व जमाने के लिए पूरा ज़ोर लोग लगाया,परंतु सफल न हो सके।हद तो तब है जब इस आधुनिक युग में आधुनिक साधनों से युक्त अमेरिकी सेना इस क्षेत्र में बीस साल का समय बिताकर,लगभग 2 ट्रिलियन डॉलर की राशि खर्च कर के और लगभग 2400 सैनिकों की आहुति के बाद भी हार कर वापस अमेरिका जाने को विवश है। इसका कारण यह है कि भले ही अफग़ानिस्तान हर मोर्चे पर पिछड़ा हुआ है,परंतु अपनी लड़ाका प्रवृत्ति पर आज भी कायम है। यहाँ वही तरकीब कायम रह सकेगी जो यहाँ के कबीलाई लोग चाहेंगे,चाहे वो तालिबान की शक्ल में हो या किसी और रूप में हो।बाहरी सत्ता को बेदखल करना अफग़ानियों का प्रिय शग़ल रहा है,इसके लिए जान-माल का जितना भी नुकसान हो जाए,उन्हें परवाह नहीं।हम इस क्षेत्र में शांति की सिर्फ उम्मीद ही कर सकते हैं,और कुछ नहीं। अफग़ानिस्तान पर कब्जा करने के बाद तालिबान ने एक नया पैंतरा चला है-आम माफ़ी देने का।आम माफ़ी को ऐसे समझें कि अगर किसी क्षेत्र विशेष को जीत लिया जाता है तो जीतने वाले पक्ष की तरफ से वहां के रहवासियों को बिना कोई कष्ट दिए उसी क्षेत्र विशेष में कुछ शर्तों के साथ शांतिपूर्ण सह अस्तित्व का मौका दिया जाना ही आम माफ़ी है।यहां प्रश्न यह उठता है कि तालिबान के पास ये आईडिया आया कहाँ से?

इसका जवाब है कि आम माफ़ी का ऐलान इस्लामिक इतिहास में कोई नई बात नहीं है।सबसे पहले यह घोषणा इस्लाम के पैग़म्बर और आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद (सल्ल0)के द्वारा सन 629-630 ईसवीं के आस-पास(हिजरी संवत के अनुसार 8 हिजरी) उस समय हुई जब आपके(हज़रत मोहम्मद सल्ल0) द्वारा मक्का पर विजय प्राप्त कर ली गई थी।सम्पूर्ण मक्का आपके(हज़रत मोहम्मद सल्ल0) कदमों में था और उस ज़माने के रिवाज़ के अनुसार कुरैश युद्ध में पराजय के पश्चात अपने साथ बुरा सुलूक होने का इंतजार कर रहे थे।परंतु ऐसा नहीं हुआ बल्कि उन्हें आम माफ़ी दे दी गई।सम्पूर्ण मानवता के इतिहास में यह ऐसी पहली अनोखी घटना थी। इस घटना ने ग़ैर-मुसलमानों के बीच इस गलत भावना को मिटा दिया कि इस्लाम तलवार के बल पर फैला है।साथ ही हज़रत मोहम्मद(सल्ल0)के किरदार को भी सारी दुनिया के लोगों के बीच और लोकप्रिय और मजबूत बना दिया आम माफ़ी की एक और घटना 1187 ईसवीं में तब पेश आई जब सीरिया के सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जेरुसलम को ईसाइयों पर जीतने के बाद वहां की जनता के लिए आम माफ़ी का ऐलान कर दिया।यही कारण है कि सुल्तान से सलीबी जंगों में ज़िल्लत भरी कई शिकस्तों के बावजूद ईसाई इतिहासकार सुल्तान के किरदार की तारीफ करने को मजबूर हैं।एक और घटना सन 1453 की है जब सल्जुक तुर्कों ने सामरिक और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण कुस्तुन्तुनिया(वर्तमान इस्ताम्बुल)को जीतने के पश्चात वहां आम माफ़ी की घोषणा कर दी।तब तुर्कों का सुल्तान ऑटोमन शासक महमत द्वितीय था।इस घटना के चलते महमत द्वितीय को सल्जुक सुल्तानों में विशेष प्रतिष्ठा मिली। इन घटनाओं से क्या तालिबान प्रेरणा पा रहा है या फिर सिर्फ दुनिया के सामने अपनी छवि चमकाने के लिए प्रोपगेंडा फैला रहा है?पहले तो ये बर्बर कबीलाई ये जान लें कि ये लोग पैग़म्बर ए इस्लाम के पांव की धूल के बराबर भी नहीं हैं,इसलिए ऐसी कोई भी बचकानी हरकत से बाज़ आएं।रही बात सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी और सुल्तान महमत की,तो इस्लाम के इन मुज़ाहिदों के भी ये आस-पास नहीं फटक सकते।दुनिया को बेवकूफ बनाने के मंसूबों में ये कामयाब कभी नहीं हो पाएंगे।हैरानी इस बात की है कि इन जाहिलों को इतनी अक्ल कहाँ से आ गई?ये बर्बर लोग ऐसा समझते हैं कि इस कृत्य से दुनिया में ये इस्लाम के सबसे बड़े नुमाइन्दे बन जाएंगे !बहरहाल तालिबान की इस कूटनीति के पीछे पाकिस्तान, चीन या रूस की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।पर सच यह है कि तालिबान एक लड़ाकू कौम से ज़्यादा कुछ नहीं है जिनका बस मजहब भर इस्लाम है और जिन्हें इस्लाम की 'ए बी सी'भी नहीं मालूम। इसलिए इनकी धूर्तता में कोई न आए और सारी दुनिया मिलकर इन वहशियों से तबीयत से निपटे ताकि एक बार फिर इस क्षेत्र में शांति की स्थापना हो सके।

'तमाम शहरों को बांटे तूने अंधेरे,
इस हवा में तेरा चिराग कैसे बचता।'

अफग़ानिस्तान में शहर की सड़कों पर तालिबानी लड़ाके अपनी गाड़ियों में बंदूकें लहराते घूम रहे हैं। इनकी गाड़ियों की छतें खुली हुई हैं, बंदूकें आसानी से किसी को भी दिख जाती हैं,पर कोई भी इनसे डरता नहीं।सड़क पर बैठा एक बच्चा भी इनसे नहीं डरता।ये कोई आम मंज़र नहीं है।उस बच्चे ने शायद संगीन के सायों में रहना ही अपना नसीब मान लिया है या फिर उसकी संवेदना मर चुकी है।या यूं कहें कि अफग़ानिस्तान में इंसानियत ही मर चुकी है!भारत में अगर कोई व्यक्ति खुले आम पिस्तौल भी लहरा दे तो यहां भगदड़ मच सकती है।तो क्या हमलोग अफग़ानों की तरह बहादुर नहीं हैं?हम लोग दरअसल डरपोक हैं क्योंकि हम सभ्य समाज हैं,अफग़ानों की तरह असभ्य या बर्बर नहीं।

पर ये अफग़ानी बड़े बदनसीब लोग भी हैं, पिछले चालीस सालों से उनकी ज़मीन युद्ध भूमि बनी हुई है।कभी अमेरिका ने इस ज़मीन को रौंदा तो कभी तालिबान ने,अफग़ान हर स्थिति को झेलने को विवश हैं।ताजा स्थिति तालिबान द्वारा इस क्षेत्र को इस्लामिक अमीरात ऑफ अफग़ानिस्तान बनाने की घोषणा करना है।पर ये इस्लामिक अमीरात बना पाएंगे?इसके लिए तो इनका मुसलमान होना ज़रूरी है और मुसलमान तो ये कतई नहीं हैं क्योंकि ये इंसान ही नहीं हैं।

विश्व की सारी शक्तियां इस मुद्दे पर अपने-अपने स्वार्थ के तले डरी हुई हैं।चीन और पाकिस्तान ने तालिबान की सरकार को मान्यता देने का फैसला किया है।रूस अपने हितों के चलते तालिबान को समर्थन देने की बात कर रहा है।अमेरिका अपना हित पूरा हो जाने के बाद इस क्षेत्र से विदा ले चुका है।भारत समेत यूरोपीय शक्तियां असमंजस की स्थिति में हैं।और मुस्लिम देशों ने तो इस मुद्दे पर चुप्पी ही साध रखी है।प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में अच्छी ताकतों ने मिलकर बुरी ताकतों को हराया और दुनिया में एक प्रकार से शांति और स्थायित्व का माहौल पैदा हुआ। पर अफग़ानिस्तान के मसले पर सब बंटे हुए हैं क्योंकि सब डरे हुए हैं।परंतु अफग़ानिस्तान के अंदर डर का माहौल जैसा कुछ भी नहीं है।क्योंकि एक बच्चा भी जब सड़कों पर घूमते तालिबान से नहीं डरता तो समझो 'डर' खुद यहां से डरकर भाग चुका है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**